लघुता कुछ कहती है

(लघुकथा संग्रह)

संतोष गर्ग

लघुता कुछ कहती है

(लघु कथा संग्रह)

(इस पुस्तक के सर्वाधिकार लेखिका के पास सुरक्षित हैं। इस की कोई भी पंक्ति एवं रचना किसी भी प्रकार से फ़ोटो कापी द्वारा, रिकार्डिंग द्वारा, और अन्य किसी उपकरण द्वारा बिना लेखक की अनुमति के छापी नहीं जा सकती)

लेखिका	:	संतोष गर्ग
प्रकाशक	:	संतोष प्रकाशन
सम्पर्क	:	126, एच आई जी सेक्टर - 71, मोहाली (पंजाब) 160071
मोबाईल नं	:	9356532838, 7986412630
ई-मेल	:	santoshgarg1211@gmail.com
ISBN Number	:	978-93-5416-491-0
संस्करण	:	2020
सहयोग राशि	:	200/-
मुद्रक	:	शिवा प्रिंट्रस, सैक्टर 19 ए चंडीगढ़ -160019

सकारात्मक सोच की बढ़िया लघुकथाएँ

लेखिका संतोष गर्ग की अब तक विभिन्न विधाओं में 12 कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। 'लघुता कुछ कहती है' इनका लघुकथा विधा का द्वितीय काव्य संग्रह है। इनकी लघु कथाओं की सर्वप्रथम विशेषता लघुता है। इन्होंने छोटी-छोटी बातों में लघु घटनाओं से लघुकथाओं का प्रणयन किया है। इनके संग्रह का नाम भी 'लघुता कुछ कहती है' है जो लघु शब्द को लिए हुए है। इनकी कतिपय लघुकथाएं यथार्थवादी हैं जो समाज को उसका आईना दिखाती हैं यथार्थवादी लघुकथाएं अधिकतर वृद्ध लोगों की दुर्दशा को लेकर हैं। 'वृद्ध पिता' में वृद्ध पिता की दुर्दशा का वर्णन है। 'अजी छोड़ो भी' वृद्धाश्रम को लेकर लिखी लघुकथा है। 'इतना ही सुनता है' में भी बुजुर्गों की बुरी हालत दिखाई गई है। 'उत्थान' लघुकथा 'नारी सुरक्षित नहीं' इस विषय को लिया गया है। 'समझ नहीं आती' रचना अमीर-गरीब का भेदभाव दर्शाती है।

इनकी अधिकतर लघु कथाओं में समाज का सुंदर रुप है। इन लघु कथाओं द्वारा समाज के सुधार की गुंजाइश बनती है जो कि साहित्य का धर्म भी है। 'मीता की बात' में यह बतलाया गया है कि निर्धन लोग अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देना चाहते हैं। 'पुत्रवधू' में पुत्रवधू के सद्व्वहार की सास द्वारा प्रशंसा करते दिखाया गया है। 'पिता के संस्कार' में पिता की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन है। 'विवेक' लघुकथा इस ओर संकेत करती है कि व्यक्ति को गुस्से से नहीं विवेक से काम लेना चाहिए।

'ऑटो वाली लड़की' में यह बताया गया है कि दफ्तरों में काम करने वाली महिलाओं को अपने खान-पान यानि सेहत का ध्यान रखना चाहिए। 'जल की कीमत' दूषित पर्यावरण को लेकर लिखी गई है। इसके विपरीत में भी सास बहू के सकारात्मक दृष्टिकोण को बतलाया गया है। 'अपना-अपना सोना' में सुख शांति की बात कही गई है। 'शब्द' लघुकथा कहती है कि सोचकर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। 'आदत' चुगली की आदत को बुरा बताती है। 'घर' पड़ोसी के प्रति अच्छी सोच को लिए हुए है। 'जीवन का सत्य' इस ओर संकेत करती है कि रिश्तों में भावनाओं का प्रधान्य होना चाहिए। 'शुक्र है' में यह बतलाया गया है कि घर के बड़ों को घर छोड़कर हरिद्वार नहीं जाना चाहिए। 'अपनी भाषा' में अपनी मातृभाषा का प्रयोग करना चाहिए इस ओर संकेत किया गया है।

'संकल्प' लघुकथा संकल्प करने से कार्य पूरा हो जाता है इस ओर की बात करती है।'बस इतना ही' बड़ों के आदर पर आधारित लघु कथा है। 'स्वयं को देखो' में यह बताया गया है कि दूसरों की गलतियों को देखने से पूर्व स्वयं की गलतियों को देखो। 'धिक्कार' में यह बतलाया गया है कि विदेश में रहकर अपने देश में रहना चाहिए। 'बेटी के शब्द' बेटियों के महत्व को दर्शाती है। 'माँ का कमरा' का मतलब बड़ों को घर के ऊपर नहीं घर के अंदर रखना चाहिए। 'दरवाजा' लघुकथा क्रोध नहीं करना चाहिए इस ओर संकेत करती है। 'उसकी याद में' संतुष्टि के महत्व को बताया गया है। 'प्रबंधन' में समय का प्रबंधन होना चाहिए यह बतलाया गया है। 'छि: छि:' लघुकथा में यह कहा गया है कि

अपनी प्रशंसा करो किंतु दूसरों की बुराई न करें। 'आशीर्वाद' में यह बताया गया है कि दूसरों की सहायता करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करो। 'नसीहत' में किसी का अपमान न करो यह कहा गया है। 'संस्कार' लघुकथा का उद्देश्य यह है कि जो बड़े करेंगे औलाद भी वही करेगी। 'गाय की बात' लघुकथा गलत बात मत सुनो यह कहती है। 'गुरु ने कहा' संवाद कम- मौन अधिक उक्ति को चरितार्थ करती है।

इस प्रकार उक्त लघुकथाओं द्वारा संतोष गर्ग ने समाज को एक नई दिशा देने का प्रयत्न किया है। इन लघुकथाओं में कथाकार की सकारात्मक सोच झलकती है। लघुकथाओं की भाषा अत्यंत सरल व सजीव है। संतोष जी ने इन लघुकथाओं में कई शैलियों का भी प्रयोग किया है। जैसे- सोच अपनी-अपनी, छुट्टी, अंतर प्रतिस्पर्धा, अजी छोड़ो, बात झाड़ू की आदि लघुकथाओं में तुलनात्मक, 'मेरे पिता' में संस्मरणात्मक, 'विचार बदल गया' में मनोविश्लेषणवादी तथा छोटी-सी बात, गुरु-मंत्र व 'वह बोली' में कथोपकथन शैलियों का प्रयोग किया गया है। इनकी लघुकथाओं में एक जबरदस्त विशेषता है कि पाठक इन्हें पढ़ते हुए बोझ महसूस नहीं करता। बातों-बातों में लघुकथा बन जाती है, यह गुर कोई संतोष गर्ग से सीखे। ये जीवन की छोटी-छोटी झलकियों से कुछ निकालने की चेष्टा करती हैं। इनकी लघुकथाओं में अधिकतर पात्र वार्तालाप करते दिखाई देते हैं इसलिए इनमें कथोपकथन छाए हुए हैं। लेखिका ने तुलनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। पात्र अधिकतर साधारण परिवारों के हैं। कसाब

का पूरा ध्यान रखा गया है। इन लघुकथाओं में न व्यर्थ की बातें हैं, न व्यर्थ के शब्द हैं, न ही किसी प्रकार का विस्तार है।
शीर्षक विषयानुरूप व आकर्षक हैं। पात्र अत्यंत सजीव, लगता है जैसे हमारे आस-पास ही घूम रहे हों। इन्होंने अधिकतर घरेलू पात्र लिए हैं जैसे:- दादी, नानी, पुत्रवधू, सास, माता-पिता, बच्चे, पड़ोसिनें, सहेलियाँ आदि-आदि। ऐसा लगता है कि लेखिका की दृष्टि बहुत पैनी है। जब भी उसे कोई छोटी से छोटी घटना मिलती है वह उसे आत्मसात कर तुरंत लघुकथा का रूप दे देती हैं। ये पात्रों का आपस में वार्तालाप प्रस्तुत करके किसी नए तथ्य की खोज करती हैं।
सकारात्मक सोच की इन बढ़िया लघुकथाओं के लिए मैं संतोष गर्ग जी को बधाई देता हूं और चाहता हूं कि उनका अगला संग्रह भी शीघ्र प्रकाशित हो।

प्रोफेसर रूप देवगुण
हरियाणा साहित्य अकादमी,
पंचकूला से सम्मानित
साहित्यकार,
डॉक्टर गांधी वाली गली, 13/676,
गोविंद नगर सिरसा-125055
(हरियाणा) मो:-98122-36096

आशीर्वचन

श्रीमती गर्ग मुख्य तौर पर हिन्दी में लघुकथा व कविताएं लिखती हैं। अढ़ाई दशक के लघुकथा लेखन में सन्तोष गर्ग ने कईं सीढ़ियां तय की हैं। छोटी-छोटी उपेक्षित सी, कभी-कभी तो ऐसी घटनाएं, जिनकी ओर सहज ही ध्यान नहीं जाता वह लेखिका की रचनाओं का आधार बनते हैं। किसी में पीड़ा तो किसी रचना में व्यंग्य पर सादगी व मासूमियत इनकी रचनाओं में मिलेगी। विचारों की स्थिरता, प्रतिक्रियाओं की परिपक्वता और भावों की दार्शनिकता इनकी रचनाओं में अधिक मुखर होती है। इनके व्यक्तित्व की तरह इनका कृतत्व भी सरल सौम्य है। आकृतियां, मेरे हिस्से की रोटी, अस्पर्शयता, गुप्तदान व जूस की बात इनकी प्रमुख लघुकथाएं हैं।

(2010 की पत्रिका में प्रकाशित)

डॉक्टर प्रो. हरिश्चंद्र वर्मा
(सूरदास पुरस्कार से पुरस्कृत)
सेवा निवृत्त प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष हिन्दी विभाग
रोहतक विश्वविधालय
रोहतक।

आत्मकथ्य- लघु प्रयास

'लघुता कुछ कहती है' इस कलम का दूसरा लघुकथा संग्रह है। पहली पुस्तक 'अपनी-अपनी सोच' 2001 में प्रकाशित हुई। जिसमें 68 लघुकथाएं हैं। उस लघुकथा संग्रह ने इस कलम को राष्ट्रीय स्तर के लघुकथाकारों के बीच खड़ा कर दिया। इतना स्नेह मिला कि हरियाणा प्रादेशिक लघुकथा मंच, गुरुग्राम द्वारा 'लघु कथा स्वर्ण सम्मान' भी प्राप्त हुआ। सौभाग्य है कि प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रूप देवगुण ने अपनी पुस्तक में हरियाणा की 14 महिला लघु कथाकारों के बीच इस नाचीज की भी गिनती की। साहित्यकार डाक्टर शील कौशिक व डॉक्टर बीजेंद्र जैमिनी ने भी अपनी पुस्तकों में इस लेखनी को स्थान दिया।

इस लेखनी की पहली लघुकथा 'आकृतियाँ' दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित हुई। फिर तो उसके बाद पता ही नहीं चला कि कब कैसे अनेकाअनेक लघु कथाएँ इस कलम ने रच डाली और विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुईं।

पहले की भाँति इस बार भी कलम ने लघु कथा को शब्द सीमा में नहीं बाँधा है। हां! कोशिश की है कि विस्तार से बच पाऊँ और शीर्षक के अनुसार लघुता में अपनी बात कह पाऊँ। एक समय था जब आठ-दस पन्नों में पसरी कहानी किसी उपन्यास के आगे छोटी लगती थी और लघु कथा दो-अढ़ाई पन्नों में सिमट कर भी लघु दिखती। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए मैंने लघुकथा को लघुता में कहने का प्रयास किया है। इस पुस्तक को लिखने का, प्रकाशित करने का उद्देश्य भी यही है यदि इन छोटी-छोटी अनुभूतियों को पढ़कर किसी पाठक की सोच तनिक भर भी

पहले से कहीं ज्यादा सकारात्मक हो गई अथवा सुप्त संवेदनाएं जग गई अथवा किसी एक कलमकार को कुछ लिखने के लिए प्रेरित किया तो मैं समझूंगी इस लेखनी का लिखना सार्थक हो गया।

पहले की भाँति यह भी मेरा लघु सा प्रयास है। 'लघुता कुछ कहती है' नाम के अनुरूप ही छोटी-छोटी अनुभूतियों को एकत्रित किया है जो देखी- सुनी अथवा महसूस की हैं।

इस संग्रह के प्रकाशन में मुझे मेरे पति डॉक्टर एस.एल. गर्ग, बेटा नितिन व बेटी सुनैना का सहयोग रहा। अनेकानेक पुस्तकों के लेखक व संपादक श्री मुरारी लाल अरोड़ा 'आज़ाद' जी का मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने प्रकाशन की तकनीकी त्रुटियों को दूर करने में मेरी सहायता की।

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. रूप देवगुण जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक पांडुलिपि को पढ़ा और उस पर अपने विचार भेज कर मुझे अनुगृहित किया। उनका भी मैं आभार व्यक्त करना कैसे भूल सकती हूँ।

अंततः आप सुधिजन, प्रिय पाठक इन्हें पसंद करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। लेखन में त्रुटियां मिलें तो कृपया मुझे अवगत करवाएँ तो मैं आभारी रहूँगी। एक बार पुनः सभी सहयोगियों का हृदय से आभार।

हार्दिक शुभकामनाएं सधन्यवाद :-

संतोष गर्ग

विषय सूची

क्रम सं	नाम	पृष्ठ
1	छोटी सी बात	15
2	मीता की बात	16
3	देश सेवा	17
4	उम्मीद	18
5	रीति रिवाज़	19
6	मक्खियाँ	20
7	पुत्रवधू	21
8	संस्कार	22
9	काव्य संग्रह	23
10	जन्म दिवस	24-25
11	प्रश्न	26
12	मनहर और ज्ञानू	27-28
13	उसकी पत्नी	29-30
14	सोच अपनी-अपनी	31
15	छुट्टी	32
16	वह वृद्ध	33
17	बी-प्रैक्टिकल	34
18	अंतर	35
19	ऑटो वाली लड़की	36-37
20	होम वर्क	38
21	गाय की बात	39
22	जल की कीमत	40
23	ऐसी हूँ मैं	41
24	इसके विपरीत	42

25	अपना-अपना सोना	43
26	भीतर की आग	44
27	सवाल	45
28	गुरूमंत्र	46
29	शब्द	47
30	आदत	48
31	स्पर्श	49
32	वृद्ध पिता	50-51
33	ऊँची सोच	52
34	बुज़दिल	53
35	प्रतिस्पर्धा	54
36	समझ नहीं आती	55
37	मानसिकता	56
38	दोस्त की बात	57
39	खून का रिश्ता	58
40	अजी छोड़ो	59
41	समझे कौन	60
42	अध्यक्षा	61
43	शुक्र है	62
44	अपनी भाषा	63
45	मेरे हिस्से की रोटी	64
46	वोट	65
47	संकल्प	66
48	पूँजी	67
49	बस इतना ही	68
50	स्वयं को देखें	69

51	अनुभव	70
52	बच्चे के मुख से	71
53	धिक्कार	72
54	माँ का कमरा	73
55	बेटी के शब्द	74
56	उसकी याद	75
57	गलती पर गलती	76
58	दरवाज़ा	77
59	गुड़िया	78
60	भाव	79
61	माँ की बात	80
62	प्रबंधन	81
63	भोला चेहरा	82
64	समझदारी	83
65	यह मन	84
66	वह लड़की	85
67	उसकी मुश्किल	86
68	धारणाएं	87
69	भाव और व्यवस्था	88
70	सॉरी	89-90
71	क्रोध	91
72	उत्थान	92
73	गुरू ने कहा	93
74	मेरा गाँव	94
75	छुअन	95
76	छिः छिः	96
77	आशीर्वाद	97

78	मेरा तेरा आदमी	98
79	बात झाड़ू की	99
80	महिला दिवस	100
81	औपचारिकता	101
82	वह बोली	102
83	प्रशंसा	103
84	नसीहत	104
85	खुशी की चेन	105
86	बरसात का दिन	106
87	छोटी सी जिद्द	107
88	मेरे पापा	108
89	विचार बदल गया	109
90	रिटायर आदमी	110
91	जज की विनम्रता	111
92	इतना ही सुनता है	112
93	शहीद की पत्नी	113
94	घरेलू औरत	114
95	उपहार	115

1. छोटी सी बात

जैसे ही सुमन समाचार पत्र पढ़ने बैठी तो नजर एक विज्ञापन पर जा अटकी। उस विज्ञापन में एक छोटी बच्ची अपने दादा की ऊंगली पकड़े हुए चल रही थी। सुमन ने कैंची उठाई और तुरन्त उस चित्र को निकाल लिया। पतिदेव ने देखा तो पूछा,

- "यह तो विज्ञापन है। इसका क्या करोगी?"
- "करना क्या है... सीढ़ी की दीवार पर लगाऊंगी। इस बिल्डिंग में हम पंद्रह परिवार रह रहे हैं। लोग देखेंगे और पढ़ेंगे।"
- "तो उससे क्या होगा...?"
- "होना क्या है ...यदि इसे देख कर किसी एक व्यक्ति को अपने पिता याद आ गए और उन्हें फोन कर लिया, या फिर किसी को अपनी बूढ़ी माँ याद आ गई... उसे मिलने चले गए अथवा चार दिन रहने के लिए बुला लिया... बस.... मेरा चित्र लगाना सफल हो जाएगा.. ।"

2. मीता की बात

- “अरे, मीता ! बाहर रेहड़ी वाले से फल उठा ला, हां! यह ले छः सौ रूपए पच्चास रुपए वापिस ले लेना।” जैसे ही सुजाता ने उसे कहा तो वह सेब, पपीते, अनार, नाशपतियाँ ले आई क्योंकि उसको बोझा उठाना मुश्किल था।
- “चलो ! अब इसे अच्छे से फ्रिज में करीने से रख दो। और हां! चार अलग-अलग प्लेटों में काट कर रख दो, अभी भैया और तेरे अंकल आने ही वाले हैं।”

मीता ने वह काम कर दिया।

- “ठीक है मैडम ! अब मेरा सारा काम पूरा हो गया, मैं जाऊँ?”
- “अरे हां! फिर अंधेरा हो जाएगा। यह एक सेब तुम अपने रिंकू के लिए ले जाओ।”
- “अरे नहीं मैडम ! हम नहीं लेंगे... हमारे बच्चों को आदत पड़ जाएगी और फिर रोज़ मांगेगा। हम नहीं चाहते उसे कोई गंदी आदत पड़े। ‘जो है जैसा है’ वही खाओ और जितना है उसी में रहो। मैं उसे एक अच्छा इन्सान बनाना चाहती हूँ मैडॅम...।"

वह इतना कहकर चली गई और सुजाता के लिए कई सवाल छोड़ गई।

3 देश सेवा

कुछ दिन पहले हमने मातृशक्ति समिति की ओर से "पॉलिथीन अभियान" चलाया। जिसके तहत पॉलिथीन का कम से कम प्रयोग हो और कपड़े के थैलों में सामान लाया जाए। अलग-अलग जगह पर गोष्ठियाँ करके महिलाओं को सेवा कार्यों में सहयोग देने हेतु अपील की। इसी श्रेणी में मैंने घर की बाई से कहा,

- "शीला! देश सेवा में मुझे तुम्हारी भी सहायता चाहिए।"- वह हँसने लगी...।
- "मैं क्या कर सकती हूँ जी.....?"
- "अरे! तुम तो बहुत कुछ कर सकती हो।"
- "क्या...?"
- "पहला काम - जिन घरों में तुम सफाई करती हो, उनका कूड़ा सड़क के किनारे न करके डस्टबिन में डालना और दूसरा लिफाफे में नहीं डालना। यदि किसी ने लिफाफे में डाल रखा हो तो भी लिफाफा खोलकर ही कूड़े को कूड़ेदान में फेंकना ताकि गायों के पेट में प्लास्टिक नहीं जाए... और हां- यही बात अपनी सभी सहेलियों को भी बताना।"

वह भोला-सा मुँह बनाकर कहने लगी,

- "ठीक है जी! यह काम तो मैं कर सकती हूँ पर मुझे देश सेवा क्या करनी होगी?"

4 उम्मीद

कैम्पस में रहते हुए अकसर सामान बेचने वाले घरों में आते रहते थे। ऊँची इमारत में झट से बाहर आने में भी थोड़ा सोचना पड़ता था। सवेरा ने जैसे ही घंटी की आवाज़ सुनी तो जाली में से झांक कर देखा। अठारह - बीस वर्षीय एक लड़का खड़ा था। जिसके सिर पर एक बड़ी गठरी थी। जब उसने प्रश्नात्मक निगाहों से उसकी ओर देखा तो वह कहने लगा,

- "कुछ कपड़ा दिखाना है दीदी!"..
- "हमने नहीं लेना"-उसने कहा।
- "दीदी! देख लो एक बार?"
- "नहीं! हम ऐसे कोई चीज़ नहीं खरीदते।"
- "ऐसे तो हम बेचते भी नहीं जी! मैं तो ट्रक-ड्राइवर हूँ।"

इतना सुनते ही सवेरा की तो जैसे दाईं आँख फरकने लगी। सामने वाले भी घर में नहीं हैं। उसने झटक कर दरवाजा बंद कर लिया। वह सीढ़ी उतरने लगा तो एक बार फिर से सवेरा ने दरवाजा खोलकर देखा तो वह जाते हुए उसी की ओर निहार रहा था। उसे पक्का विश्वास हो गया कि यह कोई गलत व्यक्ति है .. जरूर किसी के घर में घुसेगा। जल्दी से बालकनी में जा कर देखने लगी तो.... नीचे एक वयोवृद्ध खड़ा था। उसकी ऊंगली पकड़कर वह लड़का धीरे-धीरे चलने लगा... निराशा को कंधे पर टाँगे ....ऊँची इमारत को तकते हुए... जिसमें उसे सारा कपड़ा बिकने की उम्मीद थी।

5. रीति रिवाज

उसके पति की कार-एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। इसमें उस का क्या कुसूर? हमारे समाज में कहीं-कहीं आज भी यह बुरी रीति है कि जिस औरत का पति गुज़र जाता है उसे सभी औरतें स्पर्श नहीं करती।

कम्युनिटी सैंटर में उसके पति की तेरहवीं का दिन था। औरतों के झुंड में उसे एक किनारे बिठा दिया गया था। गुमसुम निस्सहाय सी..... निहार रही थी वह..... हमउम्र की महिलाओं को... पर कोई भी उसके पास नहीं बैठ रहा था। कम उम्र में विधवा होने के कारण किसी ने उसे नहीं छुआ। जैसे ही सुनीता ने पास जाकर उसका मुरझाया चेहरा हाथों में लिया और उसकी पथरीली आंखों में झांकने की कोशिश की. ... फफक-फफक कर रो पड़ी थी वह ..।

6. मक्खियाँ

कई बार छोटे-छोटे जीव-जंतु भी आत्म-मंथन करने को मजबूर कर देते हैं। हुआ यूं - बहुत देर से सुनीती को छोटी-छोटी दो मक्खियों ने परेशान कर रखा था। वह उन्हें बार-बार बाहर निकालने की कोशिश कर रही थी। खिड़की खोलकर भगाती तो ऐसा लगता कि बाहर निकल गईं परन्तु जैसे ही झट से खिड़की बंद करती तो फिर से कमरे में मंडराते हुए देखती। उन्हें निकालने के कई यत्न किए पर सभी व्यर्थ।

सोचने लगी - इस ईंट पत्थर के घर में घुसीं दो मक्खियों से तो मैं इतनी व्याकुल हो रही हूँ पर मेरे मन मंदिर में मंडरा रही विषय विकारों की हजारों - हजार मक्खियाँ कभी नज़र नहीं आईं। उनसे कभी परेशानी नहीं हुई। क्या कभी उन्हें निकालने की कोशिश की... ।

7. पुत्रवधू

सौम्या मेकअप करने की भाँति बाहर का काम तो अच्छे से संभाल लेती है पर मन की भाँति घर नहीं संभलता। विचारों के जैसे घर बिखरा-बिखरा रहता है। भूली-भटकी सी जब भी वह करती है गलतियां और सामान को रख देती है इधर-उधर, तब अपनी ही पुत्रवधू से कहती है-, 'सॉरी बेटे।' इसी के साथ ही उन दोनों में शुरू हो जाती है प्यारी सी नोंक-झोंक।

वह कहती है, माँ ! घर-घर है कोई शो-रूम तो है नहीं। घर आदमियों से बनता है। आदमी है तो खाएगा भी, खाएगा तो चुल्हा चाहिए, चुल्हा होगा तो कुछ पकेगा... पकेगा तो बिखरेगा भी।

सौम्या कहती, "हाँ! बर्तन होंगे तो खड़केंगे भी... बच्चे होंगे तो रोएंगे भी...।"

- "हाँ! बड़े होंगे तो डाँटेंगे भी ...छोटे होंगे तो खीझेंगे भी।"

पुत्रवधू इतना कहते ही अपनी दोनों बाँहें सौम्या के गले में डाल देती है और बच्चों की भाँति तोतली भाषा में कहती है, "छोटों को छॉली (सॉरी) नहीं कहते। तुम हो- तभी तो घर, घर लगता है- वर्ना- हम तो धर्मशाला की भाँति शाम को काम से लौटते हैं, सवेरे ही फिर निकल पड़ते हैं। घर हमारा नहीं- आपका है माँ।"

उसके मुख से सुने– यही शब्द सौम्या के हृदय को विशाल बना देते हैं, चट्टान की भाँति मजबूत बना देते हैं। अपनी ही जन्मी बेटी से बढ़कर उसे ढेरों आशीर्वाद देती हुई वह, पूरी चुस्ती-फुर्ती से जुट जाती है उसके संग, अधूरे पड़े काम निपटाने में।

8 संस्कार

जिन दिनों सास माँ जिन्दा थी तब सुधा सोचती थी कि पति माँ की क्यों सुनता है, उसे मेरी बात माननी चाहिए। माँ के पास ही क्यों बैठता है, उसे मुझे समय देना चाहिए और उसका पति वैसा करता भी था।

उन बातों को 20 साल बीत गए।

बेटा बड़ा हो गया और उसकी शादी भी कर दी लेकिन वह सुधा की नहीं सुनता। एक दिन जब सुधा ने बेटे से कहा,

- "तुम मेरी बात क्यों नहीं मानते...। प्रत्येक बात पत्नी की ही मानते हो?"

तो वह कहने लगा,

- "माँ! संस्कार आप ही ने तो दिए हैं। जो पापा करते हैं मैं वही तो कर रहा हूँ।"

9. काव्य संग्रह

शशी जी के नव-प्रकाशित काव्य संग्रह का विमोचन था। वह बहुत ही प्रसन्न थे क्योंकि यह उनकी पहली पुस्तक थी। बधाईयां देने वालों का ताँता लगा हुआ था। समारोह की समाप्ति पर जब उसके करीबी दोस्त सुनील ने गले लगाकर शुभकामनाएँ दी, तब उसकी आँखों में खुशी के आँसू भर आए।

घर वापिस आने पर रात्रि में चिंतन करने लगा... 'यह संग्रह मेरा कैसे हो सकता है..., ये कविताएं किनकी देन हैं? दोस्तों की... बहन-भाईयों की... किन लोगों की देन हैं? कुछ कविताएं माँ और पिता की ... कुछ प्रकृति की... कुछ जंग में लड़ते फौजी वीरों ने दी हैं। कुछ सपनों की देन हैं, कुछ संतों और फकीरों ने दी हैं। ये कविताएं मेरी कैसे हो सकती हैं...? कुछ रातों ने दी हैं तो कुछ चढ़ते सूरज की लाली ने लिखवाई। कुछ कविताओं में ढलती शाम का भी ज़िक्र रहा, कुछ भरी दोपहरी ने लिखीं और काली स्याह रातों ने भी। फिर ये काव्य संग्रह मेरा कैसे हो सकता है...? जब इस संग्रह में पेड़, पौधे, धरा, गगन, पृथ्वी, जल, आकाश, चारपाई, कुर्सी, कलम, दवात, कागज आदि सभी का सहयोग है। तो मैं मूर्ख! फिर क्यों कहता हूँ- यह संग्रह मेरा है..यह मेरा कैसे हो सकता है...?

10. जन्म दिवस

आज सुबह सतीश जैसे ही उठा तो पिता जी के जन्म दिवस के कारण उनकी यादें एक-एक करके आँखों के सामने आने लगी। माँ बताती है,

- "जब तुम पैदा हुए तेरे पिता बॉम्बे में थे। उन्होंने कभी जहाज में यात्रा नहीं की परंतु तेरे जन्म का समाचार सुनते ही वह जहाज से दिल्ली आए। जब तुम छोटे थे तब बुखार तो दूर, अगर छींक भी आ जाती तो झट से डाक्टर को दिखाने के लिए स्कूटर बाहर निकाल लेते। एक दिन तो रात के दो बजे थे जब तुम्हें इंजेक्शन लगवाकर लाए। मेरी तो सुनते ही नहीं थे।"

सतीश को याद था जब उसने एम.ए. की डिग्री हासिल की तब उन्होंने अपने ऑफिस के पूरे स्टाफ को लड्डू बाँटे थे। उसकी माँ पूजा-पाठ में, भगवान में विश्वास रखती है। इसी कारण पी.एच.डी. के समय पिता जी मां से बार-बार पूछते कि तू बता! संजू का पी.एच.डी. में एडमीशन हो जाएगा न? माँ कहती, "हाँ-हाँ! होगा क्यों नहीं- बेटा तो मेरा है, पक्का होगा।"

फिर कहते, "यदि इसका एडमीशन हो गया तो तुझे नए झुमके बनवा कर दूँगा। उसके बाद भी रोज़-रोज़ इसी बात को रिपीट करते रहते और फिर... उन्होंने ऐसा किया भी।

सतीश को जो भी कपड़ा नहीं पहनना होता था, जैसे ही वह मां के हाथ में पकड़ाता तो उसके पिता जी झटसे हाथ से पकड़ लेते-

"अरे! इसको क्या हुआ है, अभी तो नया पड़ा है- मैं पहन लूँगा।"

अनेक यादें थीं उनकी...।

उनके होते हुए सतीश को कभी बैंक नहीं जाना पड़ा। घर-बाहर का सारा हिसाब-किताब संभाल लेते थे उसके पिता जी...।

अपने वचन के पक्के थे। बस... इसी कारण अब तक उन्हें पूरा स्टाफ याद करता है। आज भी जब सतीश हमेशा की भांति उनके जन्म दिवस पर जरूरतमंद बच्चों की बस्ती में फल व पुस्तकें बाँटने गया तब माता-पिता की सेवा के लिए बच्चों को समझाने लगा। ठीक उसी समय एक बच्चा उठ कर बीच में बोला,

- "सर! मैं रोज़ सुबह मेरी माँ और पिता जी के चरण छूता हूँ और अपना होम-वर्क पूरा करने के बाद पिता जी के साथ रेहड़ी पर काम भी करवाता हूँ।"

सतीश को लगा... सच में मेरे पिता जी के दिए संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ रहे हैं।

11 प्रश्न

सुगंधा सोच रही थी कि हम कितने स्वार्थी हो गए हैं। आज बेटा वापिस पुणे चला गया है। भले ही घर में चहल-पहल थी पर एक शांति सी आ गई है। जब बेटी अपने ससुराल चली गई और बेटा डाक्टरी का कोर्स करने पुणे चला गया तब से हम दोनों को एकांत ही अच्छा लगने लगा है। अब ज्यादा काम नहीं हो पाता। बेटे के आने की खबर सुनते ही सुगंधा भाग-भाग कर काम करने लगी परन्तु आने के बाद जब दो से तीन व्यक्तियों का काम करना पड़ा तब घुटने दर्द करने लगे। सोच रही थी - एक सप्ताह के लिए ही तो आया है किसी तरह निकाल लूंगी।

- "कैसे हो गए हैं हम...?"

मन में सवाल उठ रहा था कि जब हम अपने बच्चों को मेहमान की भाँति रखते हैं- तो फिर कल बुढ़ापे में यदि बच्चों को हमें रखना मुश्किल लगे तो कौन सी बड़ी बात होगी? उस समय हम कलियुग की दुहाई क्यों देते हैं?

12 मनहर और ज्ञानू

- “अरे मनहर! अब तो रेहड़ी लगाना छोड़ दो, क्यों धूप में गली-गली घूमते हो, साठ साल के हो गए।”
- “साठ का हो गया- तो क्या हुआ- तीन सौ रूपए तो अब भी रोज़ कमा लेता हूँ।” -मनहर ने कहा।
- “तुम बेटे के पास क्यों नहीं चले जाते.... उसे इंजीनियर बनाया है हज़ारों-लाखों कमाता है?”
- “हाँ! कमाता तो है- पर उस बड़े शहर में हमारा मन नहीं लगता ... हम दोनों तो यही ठीक हैं।”
- “फिर बेटी के पास चले जाओ। सुना है, दामाद जी बहुत भले हैं.. बेटी भी तो इतनी बड़ी सरकारी नौकरी में है?”
- “ना भाई ना... बेटी का अन्न कौन खाए... तुम तो जानते हो, अपने यहां बेटी के घर में मां-बाप नहीं जाते ज्ञानू.... ठहरने की तो बात बहुत दूर रही।”
- “कैसी बेकार की बातें करते हो मनहर...ज़माना बदल रहा है। देखो! तुमने खून-पसीने की कमाई से बेटी और बेटे को पढ़ाया ... दोनों में कोई अंतर नहीं समझा। बोलो, बोलो... चुप क्यों हो? तुमने बेटा-बेटी में कोई भेद किया?”
- “नहीं...।”
- “दोनों को पैरों पर खड़ा किया... दोनों को नौकरी पर लगवाया फिर तुम्हारे मन में ग्लानि क्यों?”
- “ना ...ना मैं नहीं जाऊँगा... मेरे यहां रहने में क्या बुराई है... अच्छी भली रेहड़ी लगाता हूँ... कमाता हूँ- खाता हूँ...
-
-

न किसी से कुछ कहना – न सुनना। आराम से रहते हैं हम...।"

- "यह तुम्हारा अहंकार है। देखो मनहर! बुढ़ापे में हमें थोड़ा झुकना भी चाहिए। हमने अपनी खूब चलाई। अब नई पीढ़ी, नये ज़माने के अनुसार हमें भी तो चलना चाहिए।"
- "नहीं-नहीं।"
- "तुम जैसे जिद्दी व्यक्ति के साथ बहस करना बेकार है।"

(एक महीने बाद)

- "अरे मनहर! घर का सामान क्यों बाहर निकाल रहे हो?"
- "राम-राम भाई! बेच रहा हूँ- कबाड़ी को।"
- "क्यों- तो फिर बेटी के पास जा रहे हो क्या?"
- "बेटा-बहू आ रहे हैं ज्ञानू, दोनों यहीं नौकरी करेंगे। तुम्हारी भाभी के कहने पर मैंने रेहड़ी लगानी छोड़ दी है।"
- "चलो अच्छा हुआ! आज एक खुशखबरी सुनने को मिली। अब तो खूब सेवा होगी।"
- "हाँ-हाँ! पर ज्ञानू तुमने क्या सोचा?"
- "तुम तो जानते हो हमारी तो एक ही बेटी है। यहां की थोड़ी सी ज़मीन है वह बिक जाए और फिर बेटी के पास ही रहेंगे। हमारी एक नातिन है, वह रोज़-रोज़ फोन करती है, 'नानू कब आओगे... नानू कब आओगे।' बस- रिटायर होने में छः महीने बाकी है फिर चले जाएँगे। तुम तो यही रहोगे न मनहर, तुम्हें मिलने यहाँ आया भी तो करूँगा।" अरे! हाँ-हाँ ज्ञानू, यह तो मैं भूल ही गया था। दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

13 उसकी पत्नी

.....शादी हुए अभी तीन महीने ही हुए थे कि पीयूष ने सीमा को अचानक दवाई खाते हुए देखा। हैरान हो कर पूछा,

- "क्या खा रही हो?"
- "कुछ नहीं-कुछ नहीं।"

वह चुप रहा... शंका जागी। दूसरे दिन पता चला वह दवाई तो डिप्रैशन की थी। आखिर सभी घर वालों को भी पता चल गया। काना-फुसी होने लगी थी- 'क्या करें।' माँ, पिता जी व दोस्तों की एक ही सलाह थी कि 'नहीं रखना। इसे मायके छोड़ आओ।'
पीयूष उसे छोड़ आया।

उसके बाद तो उसने सीमा का फोन सुनना भी बंद कर दिया। उन्होंने अन्य कोशिशें की तो परिवार ने दो टूक जवाब दे दिया कि पहले इसका इलाज करवाओ। आठ महीने गुज़र गए थे। पीयूष ने सिर्फ यही संदेश भिजवाया कि तलाक़ दे दो। अंदर से डर भी रहे थे कि कोई कार्यवाही हमारे खिलाफ न कर दें।

आखिर वह दिन जब वह बेटी को लेकर उनके ही घर आ गए। आते ही वह पीयूष से लिपट गई- सभी के सामने। वह धीरे से अपने कमरे की ओर ले गया। वह रोती ही जा रही थी...। पीयूष भी रोने लगा।

- "बताओ! क्यों छोड़ा था मुझे... इतने दिन हो गए... बताओ?" वह उसे मारने भी लगी थी (प्यार में) वह पत्थर सा ताकता रहा उसे...। "क्यूँ—क्यूँ? यदि तुम्हें कुछ ऐसा होता शादी के बाद... तुम कोई दवाई लेते होते... क्या मैं तुम्हें छोड़ कर चली आती?"

वह कुछ न बोल पाया सिर्फ 'न' में सिर हिला दिया.....।

पीयूष लम्बी पुरानी यादों में बैठा था कि अचानक पत्नी सीमा ने आकर झकझोर दिया। अरे! अरे! क्या सोच रहे हो-इस बार चिंटू की पांचवी कक्षा की बोर्ड की फीस भरनी है।

- **"हाँ - हाँ, सीमा! जल्दी से तैयार हो जाओ।**

14 सोच अपनी अपनी

सुशीला सोच रही थी... मुझे इस घर में काम करते हुए पाँच साल हो गए। इस बार मैं भी मालकिन को तोहफा दूँगी। वह तो मुझे हर बार देती है। पर दूँ क्या... बढ़िया से बढ़िया लेकर आऊँगी, पूरे साल पैसे जो जोड़े हैं।

मालकिन सोचती है कि घर में पिछली दीवाली का इतना सारा सामान पड़ा है, हमारे तो किसी काम का नहीं- उस सारे बेकार सामान को निकाल दूँगी- नौकर-चाकरों के काम आ जाएगा। बाज़ार से नया क्यों लाऊँ, पैसे भी बच जाएँगे।

15 छुट्टी

- “सर ! मुझे छुट्टी चाहिए। दीवाली है, मैं अपने बच्चों के संग मनाऊँगी, साल भर का त्यौहार है बहुत काम होता है। कृपया सर ! छुट्टी दे दीजिए।”

आखिर मैनेजर साहब मान गए और सविता को छुट्टी मिल गई। वह खुशी-खुशी घर वापिस आ गई।

अपनी काम वाली बाई को...

- “छुट्टी ! छट्टी किस बात की- त्यौहार पे ही तो काम होता है। तुम छुट्टी लेकर घर में बैठोगी और मैं काम करूँगी। नहीं मिलेगी छुट्टी।”

16 वह वृद्ध

मैनेजर के पास आकर एक व्यक्ति ने बताया- सर! जल्दी आओ। शहर वाली बिल्ड़िंग से दस नंबर में जो कल नया वृद्ध भर्ती हुआ है वह गश खाकर गिर पड़ा है। मुझे तो लगता है कि उसकी स्थिति ठीक नहीं है।

- "हुआ क्या ?"
- "नहीं पता। उसके साथ वाला भाई बता रहा है वह खिड़की में झाँक रहा था कि अचानक 'पोता- मेरा पोता- बहू' कह कर काँपने लगा और कसकर मेरे बाजू पकड़ते ही गिर पड़ा।"

सभी उसके कमरे की ओर जाने लगे। पास पहुँचे तो देखा जो अतिथिगण वृद्ध आश्रम को फल व डोनेशन देने पहुँचे थे- वह भागकर उस वृद्ध के पास पहुँच गए

- "दादा जी- दादा जी! बाजू पकड़कर हिलाने लगे।"
  वृद्ध के मुख से 'बेटा... चुन्नू बेटा..... मेरा चुन्नू' शब्द निकलते ही प्राण निकल गए।

17 बी प्रैक्टिकल

- **“अरे! तुम यह लम्बी-लम्बी कहानियाँ कैसे लिख लेते हो?”**
- **“कोई मुश्किल नहीं...।”**
- **“भई! मुझसे तो बस यह लघुकथा से ही आगे नहीं बढ़ा जाता।”**
- **“अच्छी बात है। आप यह जो एक किताब में सौ लघुकथाएं लिखते हो न? वह हमारी उतनी ही कहानियाँ बन जाती हैं?”**
- **“वह कैसे...?”**
- **“पढ़ते हैं और लिखते हैं?”**
- **“यह तो चोरी हो गई।”**
- **“चोरी कैसे हुई।”**
- **“भावों की चोरी- संवेदनाओं की चोरी...।”**
- **“हा-हा-हा! कहां चुराई आपकी लघुकथा- क्या प्रुफ है? इसे चोरी नहीं कहते...। बुद्धिमानी कहते हैं...। दिमाग लगाना पड़ता है... कहाँ पर आपकी नकल की...। लघुकथा को विस्तार तो हमने दिया। कहानी का निचोड़ लघु कहानी और लघुकथा का विस्तार कहानी- आप नहीं समझोगी... बी प्रैक्टिकल...।”**

18 अंतर

कहते हैं-

जैसा खाओ अन्न वैसा बने मन....।

जैसी संगत वैसी रंगत....।

अच्छे संग में रहोगे तो दया, धर्म, त्याग के विचार आएंगे। संगति सही नहीं होगी तो भीतर भी वैसा ही बन जाएगा। कुछ दिन पहले सत्संग भवन में जाना हुआ। वहां जो भी संगत होती थी उन्हें भगवान का रूप माना जाता। उनके लिए भोजन नहीं प्रसाद तैयार होता। जो कुछ पकता, पहले भोग लगता। फिर गाय कुत्ते को खिलाकर उसे भोजन प्रसादी के रूप में अथितिगण ग्रहण करते और उसके बाद जो बचता पूरे परिवार को खिलाकर प्रबंधक आप लेते।

इसके विपरीत किसी फिल्मी गीतों के समारोह में जब जाना हुआ वहां जो कुछ खाने का बना वह सबसे पहले छिपकर प्रबंधकों ने स्वयं पेट भरकर खाया और फिर आमंत्रित लोगों को भोजन मिला। समारोह को अंत में झूठन गायों और कुत्तों ने खाई। पाँच-दस लोग जिन के लिए नहीं बचा वह बुरा-भला कहते हुए खुसर-फुसर करते निकल गए। यह है प्रभाव। हम करते क्या हैं, किस संगत में रहते हैं, किस परिवार से हैं। जड़ें क्या हैं हमारी और क्या सिखाया पढ़ाया गया है हमें।

19 ऑटो वाली लड़की

आज ऑटो में सुरैया को एक लड़की मिली जो देखने में बिल्कुल दुबली-पतली थी। पूछने पर उसने बताया, "आंटी! 'नॉर्थकन्ट्री' में काम करती हूँ। मुझे दस हज़ार रूपये मिलते हैं और पंद्रह सौ रूपये ऑटो में आने-जाने के खर्च हो जाते हैं। बाकी रूपये माँ ले लेती है। खाना मैं साथ में लेकर जाती हूँ।"

सुरैया ने हँसते हुए पूछा, "तुम्हारी मम्मी तुम्हें दूध देती है?"

- "नहीं आंटी! मैं पीती नहीं हूँ।"
- "फिर तो तुम्हारी मम्मी अच्छी नहीं है।"
- "नहीं आंटी! मेरी मम्मी बहुत अच्छी है।"
- "क्या फल खाती हो?"
- "नहीं आंटी।"
- "और दही?"
- "नहीं आंटी! कभी नहीं खाई।"
- "फिर तुम्हारी मम्मी क्या खाक अच्छी है। (उसके मुँह से अचानक निकल गया) जो तुम्हें पूरा दिन कमाई के लिए घर से बाहर भेजती है और तुम्हारी सेहत का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखती। तुम अच्छा खाओगी तभी तो कमाओगी। कभी जिद्द करके माँ को बोलो, 'यदि नौकरी करवानी है तो मेरी कमाई में से मुझे खाने-पीने को चाहिए।' हक माँगो अपना। माँ-बाप, बहन-भाई सब तुम्हारी कमाई के कारण अपने हैं बेटा! सेहत ठीक नहीं होगी तो कुछ ठीक नहीं होगा। यह लो मेरा मोबाइल नंबर। मम्मी से जो भी बात हो मुझे बताना।"

बातों बातों में पता चला कि उसका नाम कांची है।

दूसरे दिन ही उसका फोन आया तो कहने लगी,

- "आँटी! बात बन गई।"
- "कैसे?"
- "सच बताऊँ-कल मुझे आपकी- बातें अच्छी नहीं लगी थी। आपका लम्बा-चौड़ा लैक्चर घर आकर मैंने मम्मी को बताया। उसे सुनकर मम्मी कहने लगी, वह मैडम ठीक कहती हैं। तुम्हारी उम्र में, मैं सारा-सारा दिन घरों में काम करती थी पर कभी अपनी सेहत का ध्यान नहीं रखा। इसी कारण इस पैंतीस साल की उम्र में चारपाई पर बीमार पड़ी रहती हूँ। कल से मैं तेरा विशेष ध्यान रखूँगी और तुझे दूध-दही-फल तीनों चीजें दूँगी। इतना कहकर मम्मी ने मुझे गोद में ले लिया। आँटी! मैंने कहा था न... मेरी मम्मी बहुत अच्छी है।"

20 होम वर्क

बेटा जैसे ही स्कूल से वापिस आया तो नितिन ने पूछा,

- "होम वर्क क्या मिला है?" -तो वह कहने लगा,
- "पापा आज सर ने कोई काम नहीं दिया। उन्होंने कहा है कि शनिवार इतवार की छुट्टी है। कहीं बाहर घूमने जाना और एक जो सबसे समझदार मिले और दूसरा जो पागल लगे, ऐसे दो व्यक्तियों के नाम और अनुभव लिख कर लाना।"
- "अरे बेटा! इस काम में तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।"
- "वह कैसे पापा?"
- "देखो! समझदार तो तुमसे अधिक कोई नहीं- अपना नाम लिख लेना। रही बात पागल की... दुनिया में पागल ढूँढने की आवश्यकता नहीं, वह भी कभी-कभी स्वयं को देख लेने से काम चल जाता है। ऐसा मेरा रोज़ का अनुभव है। दूसरा भी अपना नाम लिख लेना...।"
- "पा... पा...क्या आप भी.....।"

21 गाय की बात

घर का गेट खुला होने कारण एक गाय घर के भीतर घुस गई और आते ही गोबर कर दिया। शामा ने जब देखा तो उसे रोटी देने के बाद बाहर निकालने लगी। बहुत कोशिश करने के बाद भी वह टस से मस न हुई। तब अठारह वर्षीय मिंटू जो ऊपर किराए पर रहते थे। वह लड़का सीढ़ी में खड़ा था। उसने गाय को निकालने के लिए ज़ोर से लात मारी। शामा को एकदम क्रोध आया और चीख कर बोली,

- "बेवकूफ़... पागल... बदतमीज़...! तुम्हें इतनी भी अक्ल नहीं है, क्या गाय को लात मारते हैं?"

वह चुप रहा। जैसे ही शामा को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने फ़िर से कहा,

- "भाई मिंटू! बुरा मत मानना... माफ करना, मुख से गलत शब्द निकल गए।"- जब उसने नहीं सुना तो उसने फिर दोहराया।

तब वह कहने लगा।

- "मैंने तो पहले भी नहीं सुना था और अब भी नहीं...।"

22 जल की कीमत

- “अरी उर्मिला! टूटी का पानी कम खोलो... कितनी बार कहा है, बर्तन माँजते समय फुल टूटी न चलाया करो। आज तो सुबह से पानी नहीं आया। पीने के एक जग जल के सिवाए घर में पानी नहीं है। कहते हैं- पानी की कमी हो गई है। अब सिर्फ सुबह ही दो घण्टे पानी आया करेगा, शाम को नहीं।”

जल के बिना जीवन कैसा? नदियाँ- जिन्हें हमने माँ कह कर पुकारा, उनका जल भी अब सूखने लगा है। अगर कहीं जल है तो वह दूषित हो रहा है। उस जल में कुछ लोग कपड़े धोते हैं, कुछ थूकते हैं और कुछ ऐसे हैं जो किनारों पर मल-मूत्र त्यागने से भी नहीं चूकते। अनेक लोग नहाते समय साबुन का प्रयोग करते हैं, कई कचरा तक डाल देते हैं। ऐसे में पानी की कमी तो आएंगी ही और तो और नालों का पानी भी अब नदियों में निकाला जा रहा है।

- “हां मैडम जी।”

मानस-पटल पर अनेक प्रश्न उभर कर आते हैं। हम दुहाईयां तो बहुत देते हैं पर करते कुछ नहीं। सुधार की शुरूआत यदि स्वयं से की जाए तो बहुत कुछ ठीक हो सकता है। कम से कम उपरोक्त गलतियाँ हम तो न करें।

23 ऐसी है साँवरी

साँवरी के पीछे वालों के घर में जो शहतूत का पेड़ लगा हुआ है वह वर्षों पुराना है। खूब शहतूत लगते हैं। आधा पेड़ दीवार क्रॉस करके उसके घर की ओर भी है। भरी गर्मी में जब शहतूत लगे, उसके परिवार वालों ने खूब खाए और उसी पेड़ की छाया तले वह कपड़े धो लेती। कुर्सी लगाकर लिखने-पढ़ने के लिए कुछ एकांत भी मिल जाता।

बड़ा अच्छा लगता था वह पेड़। साँवरी ने कभी पड़ोसियों को यह नहीं कहा कि आपके इस पेड़ का उसे कितना लाभ मिल रहा है। जैसे ही सर्दी आई तो फैले हुए उस पेड़ के कारण धूप रूक गई। वह पेड़ रोज़ उसे कबाब में हड्डी की भाँति तकलीफ देने लगा। उसे ऐसा लगता जैसे इसी पेड़ के कारण कपड़े सूख नहीं पाते- सारा आँगन झड़ रहे पत्तों से भर जाता है।

आखिर एक दिन साँवरी ने उनसे कहा

- “आप लोगों को यह पेड़ कटवा देना चाहिए। इससे हमें धूप की समस्या आ रही है और आँगन भी पत्तों से भर जाता है।”

फिर भी उन्होंने पेड़ नहीं कटवाया तब तो वह रोज़-रोज़ टोकने लगी। उसे तब तक चैन नहीं पड़ा जब तक उसने पेड़ की सारी टहनियाँ कटवा नहीं डाली।

24 इसके विपरीत

जैसे ही बहू ने थोड़ा-सा ऊंचे स्वर में सास मां से बात की तो वह अपमान समझकर अपने कमरे में आ गई और बहू अपने कमरे में चली गई।

- "...आखिर अपने आप को समझती क्या है... पढ़ी लिखी है तो क्या हुआ, मैं कोई कम थोड़े ही हूँ... जब देखो चीखती रहती है...।"

तरह-तरह के ऊटपटाँग बातें सास के दिमाग में चलने लगी। इसके विपरीत- लगभग दो घण्टे बाद बहू ने आकर कहा,

- "मम्मी! ये लो आपकी साड़ी.... जो फाल उधड़ा हुआ था वह मैंने लगा दिया। दरअसल कई दिन से समय ही नहीं मिल पा रहा था। सॉरी मम्मी! कोई और काम हो तो बताओ?"
- "नहीं बेटे! आई एम सो सॉरी ....।" कहते हुये सास मां की आंखें भर आईं।
- "क्या हुआ..... मम्मी?"
- "कुछ नहीं बेटा..... बस इतना बता दे मेरा दिमाग कैसे ठीक होगा...?"

25 अपना-अपना सोना

संध्या सोच रही थी कि यूँ तो सोने को ही सोना कहा जाता है जिसको हम पहनते हैं। वही तो सोना होता है जिसका कोई मूल्य हो परन्तु सही शब्दों में यदि हम सत्य के पथ पर चलें तो सोना सिर्फ गहनों वाला सोना ही नहीं होता बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए सोने से कहीं अधिक मूल्यवान कुछ और भी हो सकता है सभी की नज़रों में सोने के अलग-अलग अर्थ हैं।

यदि किसी के पास सोना हो लेकिन बच्चा नहीं तो उसके पास कितना भी सोना हो फिर भी बच्चे की एक किलकारी सोने से भी बढ़कर मूल्यवान है। एक दिन ऐसे ही संध्या की भी किसी छोटी सी बात पर अपनी पड़ोसिन ममता से उसकी तू-तू मैं-मैं हो गई तब वह बोली,

- "तुम हो ही क्या मैं दो फ्लैट, चार शोरूम और दो किलो सोने की मालकिन हूँ, तेरे पास क्या है...?"

संध्या बोली,

- "ममता जी! मेरे पास कुछ नहीं मानती हूँ लेकिन मैं आपसे भी ज्यादा अमीर हूँ। मेरे पास परिवार की शांति है, सुख है, प्रेम है जिसे तुम सब कुछ बेचकर भी नहीं खरीद सकती।"

26 भीतर की आग

-“यह साला रोज़ का झगड़ा होता है घर में... मुझे नहीं रहना इसमें ....।” - मोहित खाने की लगी लगाई थाली पलटकर निकल गया। मां पीछे से आवाजें देती रह गई। बेटे की जवान होती उम्र की ताकत को, मां की ढलती उम्र पकड़ न पाई।

मोहित एक नदी किनारे पहुंचा। पास लगे पेड़ के नीचे खड़े हुये सोचने लगा...। मेरे पढ़ने का क्या फायदा हुआ। नौकरी भी नहीं मिली। वो दो टके के गंवार दोस्त जिन्हें क ख भी नहीं आता, वह भी बाजी मार इठलाते फिरते हैं और एक मेरा बाप है जिसे बस पैसा चाहिए... रोज़ गिनवा देता है तुम पर इतने लाख खर्च किये कब कमाने लगेगा। करूँ तो क्या करूँ....? खाली एक ही तरीका है .....भीख मांगने लग जाता हूँ.. कम से कम मेरे बाप को पैसा तो मिल जाएगा...। मुझसे नहीं उसकी बेकार सी दुकान पे बैठा जाता सारा दिन मुँह उठा कर ग्राहक को ताकते रहो।

वह सोच ही रहा था इतने में धड़ाम से एक फल उसके सिर पर आ लगा। मोहित ने इधर-उधर देखा तो कोई नहीं था। उसने ज़मीन से फल उठा लिया और खाली पेट की भूख शांत की। भीतर की आग शांत होते ही उसके विचार बदलने लगे और माँ का दुःखी चेहरा आँखों के सामने आते ही वह वापिस घर लौट आया। उसने अपनी सारी डिग्रियां अलमारी में बंद कर दीं। मां से कहने लगा, मुझे माफ कर दो मां! मैं कल से पापा के साथ ही काम पर जाऊंगा और आगे से आपको कोई दुःख नहीं दूँगा। हम लोग मिलकर काम संभालेंगे, नयी सोच व तकनीक से काम को और आगे बढ़ायेंगे।

27 सवाल

शहर में पुस्तक मेला लगा था। शालिनी अपने बेटे के साथ पुस्तक मेला देखने चली गई। वहां पर एक आदनी और उसका छोटा बेटा भी पुस्तकें देख रहे थे।

घण्टे भर की छानवीन के बाद शालिनी ने दो पुस्तकें खरीद ली। उस आदमी का बेटा देखकर कहने लगा,

- "पापा! हम भी भगवान की पुस्तकें लेंगे।"
- "बेटे! ये भगवान की नहीं हैं।"
- "पापा! इसके ऊपर भगवान लिखा हुआ है।"
- "बेटे ये बहुत मंहगी हैं।"

भगवान अपनी पुस्तकें सस्ती क्यों नहीं बेचते पापा...?

28 गुरू मंत्र

- “अरी! मंदा कैसी हो?”
- “अच्छी हूँ..।”
- “बच्चे कैसे हैं?”
- “बच्चे भी अच्छे हैं।”
- “और... और तुम्हारे वो?”
- “... हूं... पूछ मत....। रोज़ का लड़ाई-झगड़ा... सारा दिन चिढ़-चिढ़ करते रहते हैं। सच पूछो तो मैं उन्हें कभी खुश नहीं कर पाऊँगी। पता नहीं, आप लोग कैसे रहते हो।”
- “हम....? मेरे पास तो गुरू मंत्र है....”
- “गुरू-मंत्र .. किस मंत्र का जप करती हो तुम? बताओ न...नीरू इन्हें खुश करने के लिए मैं कोई भी जप कर सकती हूँ।”
- “तो सुनो ... जब भी हम दोनों में थोड़ा-सा भी झगड़ा हो जाता है तो मैं मुन्ने को सास-मां के पास ले जाती हूँ। वह जब अपनी तोतली भाषा में दादी से बातें करता है तो दादी खुश हो जाती है। माँ खुश तो बेटा भी खुश। बस यही गुरू मंत्र अपनाती हूँ मैं...।”
- “वाहहह....यह मंत्र तो मैं भी अपना सकती हूँ। कोई झंझट नहीं...सच्चे मन से करो या फ़िर झूठे मन से.....है न नीरू?
- “हां मंदा! इस मंत्र से बड़ा कोई मंत्र नहीं.....।”
- “फ़िर तो सारी खुशियाँ मेरी झोली में होंगी न...?”
- “हां...हां...बाबा! पहले प्रैक्टिकली देख तो ले...”

(दोनों हँस पड़ी)

29 शब्द

कुछ साल पहले जब श्रीमती सुमन प्रिया ने घर के ऊपर का हिस्सा किराए पर दे रखा था। वहां स्नान घर और रसोई के आगे थोड़ी धूप आती थी। इसी कारण से किराए पर रह रहे विनोद जी ने मालकिन से कहा,

- "सुमन जी! बाहर छाया के लिए छत लगवा दीजिए, बहुत धूप आती है। काम करना मुश्किल हो जाता है।"
- "जी नहीं क्षमा करना हम नहीं लगवा सकते।"
- "ऐसे तो रहना बड़ा मुश्किल हो जायेगा।"
- "यह तो आपको मकान लेने से पहले सोचना चाहिये था क्षमा करना।"
- "देखिये सुमन जी! आप लगवा देंगे तो ठीक है वर्ना तो हमें मकान और देखना पड़ेगा?"
- "आपकी मर्जी विनोद जी। हमने तो पहले ही बोल दिया था कि मकान जैसा है आपके सामने है। आपको जैसा उचित लगे वैसा कीजिये क्षमा करना।"
- "मैं क्या आपको फाँसी पर चढ़ा रहा हूँ, जो आप बार-बार क्षमा माँग रही हो।"

उनके शब्द सुनकर वह निरूत्तर हो गई।

30 आदत

- 'मेरी आदत नहीं इधर-उधर की बात करने की, मैं तो बस भगवान में ही अपना ध्यान लगाए रखती हूँ।"- रूपा ने प्रीती से कहा।
- "अच्छी बात है, हमें इधर-उधर की बात करनी भी नहीं चाहिए। अच्छा! वो तुम्हारी सहेली रीना कैसी है?"- प्रीती ने पूछा।
- "वो... ठीक है पर मुझे उसकी बातें पसन्द नहीं - क्योंकि उसके साथ जब भी बात करो तो इधर-उधर की चुगलियाँ करती रहती है। कभी किसी के काम को लेकर कभी किसी के बीते दिनों लेकर और नहीं तो दफ्तर की फिजूल बातें। कोई ढंग की बात नहीं उसके पास करने को। कौन माथा मारे उससे...।"

बस इतना ही कहना था कि बीच में रूपा की आत्मा ने झकझोर कर कहा उससे... कि तू क्या कर रही है? अब तू भी तो वही काम कर रही है न जो वह करती है।

31 स्पर्श

- **“जब भी मैं उनकी कोठी पर झाड़ू-पोंछा करने जाती हूँ, बर्तन साफ करती हूँ और खाना बनाती हूँ तब वह मैडम मुझसे रोज़ पूछती है, कि क्या स्नान करके आई हो और कभी बोलेगी, मुझे स्पर्श मत करना, मैंने स्नान कर लिया है।”- मोनिका ने अपनी सहेली आशा से कहा।**
- **“फ़िर तुमने क्या कहा?”**
- **“कहना क्या था उस दिन जब मैं स्नान करके गई थी तब मैडम अभी नहीं नहाई थी”, मैंने भी कह दिया, “मैडम! मुझे स्पर्श न करना आप अभी नहाई नहीं हो, मैं नहा कर आई हूँ।”**

वह मेरी ओर टुकर-टुकर देखने लगी।

- **“ऐसा क्यों.....?”**

मैंने कुछ गलत थोड़ी न कहा था...?”

32 वृद्ध पिता

वृद्ध पिता का बड़े बेटे के पास शहर में मन नहीं लगता था इसी कारण से वह पत्नी के स्वर्ग सिधारने के बाद छोटे बेटे के पास गाँव में ही रहता था। परन्तु गाँव में भी बेटा-बहू रोटी देते हुए रोते रहते और कहते कि हम ही अकेले तुम्हें क्यों रखें, बड़ा बेटा भी तो है। वृद्ध पिता मजबूरी के कारण सब कुछ सहन करता। आखिर उसने फैसला किया कि अब मैं अलग से अपना खाना पका लिया करूँगा।

कुछ दिनों बाद जब बड़ा बेटा शहर से आया तो वह अपने साथ ले जाने के लिए कहने लगा। मन नहीं मानता था फिर भी वह लोगों के कहने पर चला गया। उसे उम्मीद थी कि अब मैं शहर में आराम से रहूँगा क्योंकि बड़े बेटे के पास नौकर चाकर और बड़ा बंगला था। लेकिन वहां भी वह आराम से रह न सका। बहू--बेटा मँहगाई का रोना रोते और दोनों अपने-अपने काम पे निकल जाते। वृद्ध पिता सिर्फ कोठी की निगरानी के लिए नौकर-चाकरों के सहारे घर में अकेला पड़ा रहता। आखिर दुःखी होकर वह वापिस गाँव लौट आया। दूसरे दिन ही उसने छोटे बेटे से कहा कि मैं अपना अलग खाना बनाया करूंगा। उसे उम्मीद थी उसका बेटा उसे ऐसा नहीं करने देगा क्योंकि इसको मैंने बड़े लाड़-प्यार से पाला है और फिर ज़मीन जायदाद भी तो सारी इसी के नाम है। परन्तु जब उसके समान अलग करने की बात आई तो वह मौन हो गया। टी.वी. देखते-देखते पत्नी बोली,

- **“पिता जी को जो बर्तन-भांडे व अन्य सामान की जरूरत है बाज़ार से मंगवा देना। लॉकर में नई गद्दी रखी है जितने पैसे की जरूरत हो ले लेना।”**

उसी समय पास खड़ा दस वर्षीय पोता रिंकू बोला,

- **“पापा! एक कमरा आपने ले लिया, एक कमरा मम्मी जी को दे दिया, मैं बड़ा होकर जब आपको अलग करूँगा तो कहां रखूगा? इसके लिए तो मुझे बड़ा घर लेना पड़ेगा न पापा.....?”**

33 ऊँची सोच

उनका घर पच्चीस साल पुराना हो गया था। आसपास के सभी मकान मालिकों ने ठीक करवा कर अपने-अपने घर फिर से सुन्दर बनवा लिए थे। परन्तु रामभरोसे अपना घर ठीक नहीं करवा पाया। इसी कारण से सभी उसके घर को खण्डहर पुकारने लगे थे। पूरी गली में बस एक उसी का घर मुरम्मत के लिए बाकी बचा था।

आखिर उसने भी तोड़-फोड़ कर घर को नया बनवा लिया। बच्चों की जिद्द के आगे उसे झुकना पड़ा। टाइल पत्थर भी लगवाए अब उसका घर पड़ोस के घर से इक्कीस दिखाई देने लगा।

फिर भी रामभरोसे के मन में कहीं न कहीं टीस उठती कि पड़ोसी की दहलीज मेरे घर से थोड़ी नीची है, उसका घर थोड़ा सा कम सुन्दर लगता है। एक दिन पड़ोसी ने आकर बताया,

- "हम अपने मकान को ऊँचा उठा रहे हैं, कल मज़दूर मिस्त्री लग जाएंगे और ऐसे-ऐसे नक्शे के मुताबिक बनवाएंगे।"

रामभरोसे का मन बहुत प्रसन्न हुआ उसने मन ही मन प्रभु का धन्यवाद किया। उसकी सोच के मुताबिक पड़ोस का घर मुझसे नीचा न हो - बराबर हो।

34 बुज़दिल

नन्हीं सी बंटी के पिता पुनीत ने जैसे ही पुलिस का फोन नंबर समाचार पत्र में पढ़ा तो सुरक्षा हेतु उत्तेजित होकर झट से मोबाइल में जमा कर लिया।

शाम को खाना खाते समय टी.वी. पर फिल्म देख रहा था, एक सीन में जब उसने देखा कि बस्ती में गुंड़ागर्दी करने वालों के खिलाफ जिसने पुलिस को फोन किया और गवाही दी, उन्हीं बोलने वालों को गुंडों ने मौत के घाट उतार दिया। गली-मोहल्ले के एक भी व्यक्ति ने विरोध नहीं किया, चारों ओर चुप्पी थी.....

तब पुनीत के चेहरे पर भय के भाव देखकर पत्नी ने पूछा,

- "क्या हुआ?"
- "कुछ नहीं।"

इतना कहते ही उसने अपने मोबाईल से वो नंबर उड़ा दिया जो एक दिन पहले ही जमा किया था।

35 प्रतिस्पर्धा

- “ए जी! सुनो ना- आज पड़ोस की डायरेक्टर मैडम ने दस हज़ार की साड़ी बांध रखी थी। मैं भी महता जी के बेटे की शादी में कम से कम अढ़ाई हज़ार की साड़ी खरीदूँगी।” शान्ती ने अपने पति से कहा।
- “अरी भागवान! रहने दे- क्यों मेरी जेब खाली करवाने पर तुली हो।”

आखिर शांति जिद्द करके सहेली के संग बाज़ार जाकर ज़री और वर्क वाली अट्ठारह सौ रूपये तक की साड़ी खरीद लाई। फिर महता जी की शादी में वही साड़ी पहनी। भीड़ में इधर-उधर इठलाते फिरते, खाते-पीते उसके संग किसी के खाने की प्लेट टकरा गई और उसकी साड़ी खराब हो गयी। उसे बहुत गुस्सा आया पर कुछ कह न सकी। ड्राईक्लीन के रेट ज्यादा होने के कारण आखिर घर में ही उसे धो दिया। कुछ धागे निकल गए और रंग भी चला गया। वह सोचने लगी.. मैंने कितना गलत किया। ये बड़े लोगों की देखा-देखी में मुझे नहीं आना चाहिए था। अपनी हैसियत के अनुसार ही करना चाहिए।

- "अरे शांति! क्या सोच रही हो?" -पति ने पूछा।
- "कुछ नहीं जी! मुझे तो यह साड़ी अभी छत्तीस बार पहननी थी। पिछली बार पाँच सौ की साड़ी खरीदी और कितनी बार पहन ली, फिर भी अभी तक खराब नहीं हुई।"
- "हां शांति! पहले तेरी सोच पवित्र थी और इस बार सोच में खोट था...।”- कहकर वह मुस्कराने लगा।

36 समझ नहीं आती

वह थका हारा तीसरी मंज़िल पर जैसे ही कमरे में पहुँचा तो एक लंबी सास लेते हुए, 'हे भगवान' कह कर धड़ाम से चारपाई पर लेट गया। "क्या हुआ?" पत्नी ने पूछा। "कुछ नहीं...।" वो बोला।

-"पैसे मिले...?" "नहीं....। आज मैडम देना भूल गई।"

- "तो माँग लेते?"
- "मुझे माँगते हुए शर्म लगती है। अभी दो तारीख तो हुई है। तुम लोगों ने खाना खाया कि नहीं?"
- "आप कह कर गए थे, मैं आटा सब्जी लेकर आऊँगा।"

बच्चों ने दिन की बची हुई रोटी दूध के संग खाली और सो गए। मैं तो एक घण्टे से आपका इन्तज़ार कर रही थी। गोबिन्द को गहरी सोच में देखकर मीना ने पूछा- क्या हुआ...डाँट पड़ी क्या?

-"नहीं - मैं सोचता हूँ मेहनत तो हम लोग करते हैं। वो लोग तो खाली कुर्सी पर बैठे रहते हैं, दो लोग हैं घर में और ढ़ाई किलो दूध लेते हैं। चार-चार किलो फल लाते हैं, जूस पीते हैं और अभी एक किलो मक्खन निकाल कर आया हूँ। मुझे समझ नहीं आती जिसे भगवान कहते हैं वह इतना भेदभाव क्यों करता है। जो मेहनत करते हैं उन्हें तो खाने को नहीं देता औरों को इतना-इतना देता है फिर वह सारा दिन खाते ही रहते हैं। झाड़ू हम लगाएं, बर्तन हम करें, रोटी हम बनाएं फिर भी हमारे परिवार को रोटी नहीं मिलती है।" वह कहना चाहती थी- कोई बात नहीं भगवान देगा परन्तु नहीं कहा। चुपचाप अलमारी खोली जो चावल उबालकर रखे थे। वह खाने के लिए डालकर ले आई।

37 मानसिकता

- “सुनिए! मिसिज़ गोयल यह डिब्बा दे गई है बेटे की शादी का।”

- “अरे! हम जा तो आए थे- खाना भी खा आए थे। फिर डिब्बा किसलिए दे कर गए हैं?”

- “मुझे नहीं पता, आप सोए हुए थे, गोयल साहब ने जगाने नहीं दिया। मैंने डिब्बे के लिए मना किया था पर माने नहीं।”

- “डिब्बा तो बहुत सुंदर है।”

- “हां सुंदर तो है। रख देते हैं ज्यूँ का त्यूँ बेटी के काम आ जाएगा। दो दिन बाद वह आने वाली है उसे दे देंगे।”

- “अरी भागवान्! खोलकर तो देख ले, इसमें है क्या। कहीं ऐसी- वैसी मिठाई तो नहीं जो खराब होने वाली हो।”

- “...बादाम-काजू! अच्छी बात है- मिठाई तो आजकल खराब हो जाती है- लोग समझदार हो गए।”

- “क्या खाक समझदार हो गए। पेट कोई बादाम से भरता है। मैंने तो सोचा था बर्फी या गुलाब-जामुन खाने को मिलेंगे। यह आधा किलो तो होंगे....?”

- “मुझे तो कम लगते हैं, तोल के देखूँ?”

उसने फ़्रिज पर मशीन पर डिब्बा तोलने के लिए रखा ही था कि इतने में बाहर घंटी बजी। देखा! मिसिज गोयल सामने खड़ी थी, कहने लगी...अरे! पर्स तो मैं यहीं भूल गई थी। अंदर आकर ड्राईंगरूम में इधर-उधर देखा.....अरे हां- याद आया.. फ्रिज़ के ऊपर रखा था, वह बोली। आखिर वह रसोई में आकर देखने लगी तो पर्स वहीं पर पड़ा था। उसने उठाया और बाहर गई। पर शुक्र था भगवान का उसे वहीं पड़ा वह डिब्बा दिखाई नहीं दिया।

38 दोस्त की बात

मेरे ब्यूटी पार्लर में दोस्त फेशियल करवाने आया, वह भी पहली बार। मुझे देख कर हैरानी हुई। मैंने कहा,

- "यूँ तो आजकल दिखता ही नहीं, आया भी है तो अपने काम के लिए और सुनाओ! क्या हालचाल है?"
- "फॉरेन जा रहा हूँ।"
- "क्यों बकवास कर रहा है?"
- "नहीं यार! सच कह रहा हूँ।"
- "अच्छा तो फॉरेन से मेरे लिए क्या लाओगे?"

वह ज़ोर से हँसा और कहने लगा, "मैं स्वयं आऊँगा।"

- "ज्यादा चुस्त मत बन। जो कोई एक बार जाता है, वहीं का होकर रह जाता है, मैं जानता हूँ। बता क्या लाएगा मेरे लिए?"
- "अरे यार! सच ही कह रहा हूँ। देख! लोग एक बार जाते हैं- वहां की चकाचौंध देखकर कुछ दिनों बाद वहीं के होकर रह जाते हैं.... पर मैं अपने देश वापिस आऊँगा... पक्का-पक्का आऊंगा।"

जाते-जाते वह जब गले लगकर मिल रहा था तो उसकी आँखों में आँसू आ गए थे। वह फिर से हंसा... और कहने लगा....

- जाता हूं.... फिर मिलते हैं 'शामू टी स्टाल' पे इकट्ठे चाय मठरी खाएंगे....।

39 खून का रिश्ता

सूरज पूजा पाठ को नहीं मानता था, उसने गरीबी देखी थी। उसकी माँ बीमार रहती थी फ़िर भी वह घर का सारा काम करती और उसकी ताई अमीर घर से थी इसी कारण उसे कोई कुछ नहीं कहता था।

वह देखता तो मन में एक ही बात दिन रात घूमती रहती कि हम अमीर कैसे बनें और पैसा कहां से आए। वह पढ़ाई में होशियार था। किसी न किसी तरह इंजीनियरिंग में दाखिला हो गया और जब इंजीनियर बन कर वो साठ हजार रूपये महीना कमाने लगा तो ताई रोज़ मां के पास आती और अपनी भतीजी के लिए उसका रिश्ता माँगती, आखिर ताई की मुराद पूरी हो गई।

ताई के स्वयं के बच्चे विदेश में रहते थे। वो बीमार रहने लगी उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं था। जब डाक्टर को दिखाया तो रिपोर्ट से पता चला कि ताई को कैंसर है। कैंसर का नाम सुनते ही माँ, परिवार के द्वारा दिए गए सारे दुःखों को भूल गई। पर सूरज उनके दिए सितम माँ को गिनाने लगा। फ़िर भी माँ कहने लगी,

- “नहीं, बेटा! तुम दोनों उसकी सेवा करोगे, आखिर वह तुम्हारी सगी ताई है।”

40 अजी छोड़ो

वो दोनों एक ही उम्र के तो हैं। सतीश और कपिल इकट्ठे एक ही गांव में पढ़े, वहीं हिसार के पास हाँसी का उनका जन्म है और शादी के बाद दोनों हिसार में ही रहने लगे। बस फर्क इतना था कि कपिल शुरू से ही माँ-बाप, बहन-भाई पूरे परिवार के साथ रहा और सतीश अकेला, पत्नी व बच्चे के संग रहा। उसने कभी परिवार की परवाह नहीं की और कपिल हरदम अपने फर्ज़ निभाता रहा। बस यही कारण था कि सतीश पैंतालीस की उम्र में भी लड़कों जैसा दिखाई देता और कपिल चिंता के कारण वैसा नहीं दिखता था।

एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा,

- "अरी किरण! तुम्हीं बताओ, क्या मैं बूढ़ा दिखने लगा हूँ?"
- "अजी छोड़ो! इस चिंता को। आप जैसे भी हैं सुंदर लगते हो। हमारी इज्जत तो है, सतीश मुस्टंडे का क्या है- ऐसी जवानी को आग लगे जो मां-बाप को वृदाश्रम में छोड़ दे।"

41 समझे कौन

स्टेशन पर गाड़ी का इंतज़ार करते हुए एक व्यक्ति से मुलाकत हुई तो बातों-बातों में उसने बताया कि, "मैडम! क्या बताऊँ आपको.... आप तो दूसरों की बात कर रही हो, मैं तो अपनी बात बता रहा हूँ- पड़ोसी व दोस्त सोचते हैं कि मैं मोटी मुर्गी हूँ, पर मुझे पता है कि रिश्तेदारों का मैंने कितना कर्ज़ चुकाना है। कितना कर्जा मेरे सिर पर है। वह सोचते हैं- मेरा आलीशान बंगला है परंतु पहले मैं भी छोटे घर में रहता था, हर व्यक्ति से मिल लेता था और अब तो चेहरों की परख भी मुश्किल हो गई है। कौन सच्चा है, कौन झूठा- पता ही नहीं चलता। कभी सच्चाई झूठ लगती है और कभी झूठ भी सच लगता है।" -"यह बात तो आप ठीक कह रहे हो भाई! आजकल सही व्यक्ति की पहचान करना मुश्किल हो गया है...। सुषा ने कहा।

-"मेरे मन की और सुनो मैडम ! लोग कहते हैं मेरा इतना बड़ा कारोबार है- मेरे लड़के इतनी बड़ी-बड़ी गाडियों में घूमते हैं- पर मेरे भीतर का दर्द कोई नहीं जानता कि वह कितने नालायक हैं।--

-"क्या कह रहें हैं आप?"

-"सारी कमाई को शराब की पार्टीयों में उड़ा देते हैं। रात के दो-दो बजे घर पहुचते हैं और मेरी इतनी भी पूछने की हिम्मत नहीं कि वो कहां थे, घर लेट क्यों आए.... हम दोनों पति-पत्नी के पास बैठना तो दूर की बात है। ...और बताऊं मैडॅम ! मेरा स्वभाव भी पहले अच्छा था अब मैं चिड़चिड़ा हो गया हूँ। जो भीतर की बातें जानते हैं वह बात करने से कतराते हैं जो छोटे वर्ग के लोग हैं वह सोचते हैं मैं बड़ा आदमी हूँ- आखिर मन की समझे कौन?"

42 अध्यक्षा

वह नारी समाज उत्थान केंद्र की अध्यक्षा थी। आज कल हर जगह भ्रूण हत्या के मामले में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रही थी। कुछ दिन पहले जब वह इसी मामले को लेकर किसी गांव की औरत को समझाने घर से बाहर गई हुई थी तो पीछे से संयुक्त परिवार में रहते हुए भी उसके अपने पेट के सोलह वर्षीय बेटे ने पड़ोस की चौदह वर्षीया बेटी के साथ मुंह काला किया।

उसका मन किया... उसे फाड़ के खा जाऊँ... मार दूँ उसे या स्वयं ज़मीन में गढ़ जाऊं...। बेटी को गाढ़ दूँ... पर पत्थर बनी बैठी रही कुछ भी नहीं कर पाई। कहती तो किसी से क्या कहती। चाचा ने पीटा- चाची ने पीटा....। दादी ने सिर के बाल नोंच डाले... छाती पीटने लगी। वह कुछ न कर पाई क्योंकि स्वयं नारी उत्थान केंद्र की अध्यक्षा थी।

43 शुक्र है

आठ दिन बाद तीर्थ यात्रा से वापिस आई सास-माँ को रंजना ने कहा, 'मम्मी देखो! सीमी (काम वाली लड़की) कितनी खुश है।

-"हाँ बेटा! बॉस के जाने के बाद कौन खुश नहीं होता, तुम भी तो बहुत खुश नज़र आ रही हो। हां तो रंजना! मैं वहीं हरिद्वार में एक किराए का कमरा रहने के लिए देख कर आई हूँ। एक सप्ताह बाद मैं यहाँ से अपना समान भी वहीं ले जाऊँगी और तुम लोग खुशी से रहना।"

रंजना तुरंत परेशान होकर बोली," सुनो सुनील! मम्मी हरिद्वार जाने को कह रही हैं परन्तु यहाँ कैसे चलेगा? आयरा को स्कूल छोड़ने की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी और लेने की जिम्मेदारी मेरी होगी। पहले से काम बाँट लें तो अच्छा होगा। एक दिन इसे तुम नहलाओगे और एक दिन मैं। खाना तुम पकाओगे और टिफिन मैं बनाऊँगी।"

- "हाँ-हाँ! मशीन मैं चला दिया करूँगा और कपड़े तुम सुखाओगी। बाज़ार से सब्जी तुम लाओगी- सँभाल मैं दूँगा।"

- "बाप रे! इतने सारे काम...। सुनो-सुनो! तुम एक काम करो न... तुम्हारी तो माँ है यार! उन्हें किसी तरह वहां जाने से रोको न? हरिद्वार में रखा ही क्या है...घर में उनकी केयर भी हो जाएगी।"

-"ठीक है- ठीक है... कोशिश करके देखता हूँ...।"

-"मम्मी! वो मैं कुछ कहना चाहता था.।"

-"जानती हूँ- जानती हूँ.. मैंने सब सुन लिया है। कोई टिकिट-विकिट नहीं करवाई मैंने और न ही कोई कमरा देखा है। मैं अपनी आयरा और रंजना को छोड़ कर कहीं नहीं जाने वाली।"

44 अपनी भाषा

सुनंदा का जन्म विदेश में हुआ। वह पांच साल की थी तभी उसके मम्मी-पापा वापिस भारत आ गए थे। यहीं पर उसकी पढ़ाई लिखाई और शादी हुई।

हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी है। सुनंदा अंग्रेजी में तो अच्छे से बात कर सकती थी परंतु अपनी भाषा में नहीं। इस बात का उसे बहुत घमंड था। ऑफिस में भी उसे किसी का संग अच्छा नहीं लगता था कल भी ऐसा ही हुआ। छोटी सी बात पर उसने मीशा को कह दिया,

- 'अनपढ़ गँवार कहीं की।'

पहले तो वह चुप रहती थी लेकिन आज उसने पलट कर जवाब दे दिया,

- "मैडम! अनपढ़ तो आप हैं, जिन्हें अपनी राष्ट्र-भाषा का ज्ञान नहीं। आप सोचती हैं- अंग्रेजी में गिट-पिट करके दूसरों का दिल जीत लेंगी, ऐसा नहीं है। यदि आपको अपनी भाषा में बात करते हुए दिक्कत आती है तो यह आपका कसूर है.....स्टाफ़ का नहीं।"

45 मेरे हिस्से की रोटी

बहुत भूख लगी थी। जल्दी से दो मोटी-मोटी रोटी बनाई और रात की बची हुई सब्जी के साथ परोस कर, संतो आँगन की गुनगुनी धूप में बैठ खाने लगी। अभी एक ही कोर खाया था और दूसरा तोड़ने लगी थी कि बाहर घंटी बजी।

देखा तो ... कोरियर वाला था। जैसे ही वापिस आई तो इतनी देर में वह रोटी बिल्ली उठा ले गई। दीवार पर रोटी लिए बैठी वह संतो को टुकर-टुकर निहार रही थी। उसे देखते ही कुत्ता भोंकने लगा। वह डर कर भागी और रोटी नीचे गिर गई। कुत्ता वहाँ तक पहुंच भी न पाया था कि दहलीज पर भीख मांगने आए बच्चों ने वह रोटी उठा ली। छीना-झपटी करते हुए थोड़ी दूर जाकर उन तीनों बच्चों ने उसकी बोटी-बोटी कर दी। एक-एक टुकड़ा खाते हुए वह संतो की` ओर देखकर मुस्करा रहे थे और उस समय उसे याद रही थी अपनी दादी .....जो पहली पांच रोटी गाय, ब्राह्मण, कौआ, कुत्ता और सफाई वाली शीला की निकालती थी।

46 वोट

जब सीता ने उससे पूछा कि तुम वोट किसको दोगे। तब सुनते ही वह हँसने लगा।

- "इसमें हँसने की क्या बात है?"- सीता ने कहा।
- "ऐसा है जी हम दो भाई हैं। दोनों अलग-अलग पार्टी के साथ रहते हैं। उन लोगों के साथ मिल कर 15 दिन पहले ही प्रचार-प्रसार में जुट जाते हैं। खाना-पीना उनकी ओर से सारा दिन फ्री में मिलता है। हमने क्या लेना-देना..... कोई जीते। जो जीत गया, उसी से काम निकलवाते हैं।"
- "यह तो गलत बात है... वोट सोच समझ कर सही व्यक्ति को देना चाहिए।"
- "सोच गई जी भाड़ में.... इन नेताओं ने देश का सत्यानाश कर रखा है... सभी को अपनी कुर्सी की चिंता है... जब ये गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। तब हमारी चार लोगों के वोटों की चिंता से कौन सा राम-राज्य आ जाएगा।"
- "चार तो क्या, सही तो एक व्यक्ति भी बहुत होता है भाई।"
- "फिर उसे यह सब टिकने भी तो नहीं देते, अभिमन्यु की भाँति चक्रव्यूह में फ़ँसाते हैं।"

47 संकल्प

सुनयना की माँ चिड़ियों को छत पर रोज़ पानी रखती और चोगा डालती। वह भी जब शादी करके ससुराल आई तो ऐसा ही करने लगी परन्तु कभी कोई पक्षी न आता फिर भी उसने दृढ़ संकल्प को नहीं छोड़ा। वह सोचती- कि कोई बात नहीं, कभी कोई प्यासा पंछी आकर अपनी प्यास बुझाएगा.... कभी तो देगा मुझे आशीष...। मेरे भी आँगन में कभी तो चिड़िया जैसी चहकेगी नन्हीं सी बिटिया।

चातक की भाँति वह रोज़ निहारती।

आखिर एक दिन उड़ती-फुदकती एक नन्हीं-सी सतरंगी चिड़िया आई और चोंच भर पानी लेकर उड़ गई। सुनयना बहुत प्रसन्न हुई, उसके संकल्प को जैसे पर लग गए थे।

दो चार साल बाद तो ढेरों चिड़ियाँ उसकी नन्हीं सी परी के संग रोज़ आँगन में नाचती दिखाई देती।

48 पूँजी

- “तुम दिन रात जो इधर-उधर किसी न किसी सेवा में धक्के खाती फिरती हो, तुम्हें इन सबसे मिलता क्या है?” रश्मि ने पूछा।

उसकी बात सुनकर सुमिता हँसकर बोली,

- “सेवा कोई व्यापार थोड़े ही है कि आप जो करोगे उसके बदले में पैसा मिले।”
- “आप जो तीस साल से समाज के कार्य कर रही हो उसमें कोई तो कमाई होती होगी न?”- वो फ़िर बोली।
- “हां! होती है।” आखिर सुमिता ने कहा, “कमाई होती है, मैंने बहुत पूँजी एकत्रित की है, ऐसी पूँजी जिसका पूरे सौ साल तक कभी अंत नहीं होगा।”
- “वाहहह.. यह हुई न बात..। सही सोचा मैंने।”- रश्मि बोली।
- “नहीं गलत सोचा आपने। मेरी पूँजी आशीर्वादों की पूँजी है। मैंने आशीर्वादों की पूँजी एकत्रित की है। मेरा पात्र बहुत छोटा है और पूँजी ज्यादा। बस एक ही प्रार्थना करती हूँ प्रभु से कि वह मेरा शीश हमेशा झुकाए रखे ताकि मैं और पूँजी एकत्रित कर सकूँ।”
- “इसे बेवकूफी कहते हैं... मुझे तुम्हारी बातें समझ नहीं आती,” -रश्मि ने कहा।
- “मुझे समझानी भी नहीं है।”- सुमिता ने कहा।

दोनों हँसने लगी।

49 बस इतना ही

- "आंटी! भैया कब आएंगे? पड़ोस के बेटे ने पूछा।

संदीपा ने कहा, "क्या काम है सब और कुशल तो है?"

- "हां आंटी! मम्मी को दिखाना था।"
- "अरे! तुम्हारी मम्मी तो बिल्कुल ठीक है कल ही तो मिली हूँ।
- "हाँ आंटी! पर आजकल मुझसे और बड़े भाई से लड़ती रहती है, पापा जी को भी उल्टे-उल्टे जवाब देती है। भाभी का जीना मुश्किल कर रखा है। मुझे लगता है उन्हें कोई दिमागी बीमारी है। भैया डाक्टर हैं, कोई अच्छी सी दवाई लिख देंगे।"
- "क्या पहले भी कभी ऐसा लगता था?"
- "नहीं आंटी! भैया की शादी के बाद ही ऐसा करने लगी है।"
- "बेटे! एक बात कहूँ... तेरी मां को कुछ नहीं हुआ।"
- "आंटी! पैसे की कमी नहीं, खाने-पीने की कमी नहीं फिर भी।"
- "तुम ठीक कहते हो बेटा! उसे सम्मान चाहिए। तुम इलाज से पहले बस इतना करो, उसके पास बैठो- उसका कहना मानो। अगर वो दो शब्द गलत कह भी दे तो उसे सहन कर लेना। तुम रो लेना पर उसे उल्टा जवाब मत देना...। मां है पिघल जाएगी।"
- "ठीक है आंटी! इसमें कौन सी मुश्किल है।"

उसे बच्चे चाहिए- बड़े नहीं। वो देना-देना जानती है। बच्चों की डांट-फटकार का दुःख उससे सहन नहीं होता। जब उल्टा होने लगता है तो पागल नज़र आती है। कुछ दिनों बाद सीता ने जब मनजीत की मम्मी का हाल पूछा।-"आंटी! आपकी बात जादू कर गई। मम्मी बिल्कुल ठीक है सच में- उसी चीज़ की कमी थी...हुण घर विच्च बिल्कुल क्लेश नहीं हुंदा- मैं सब संभाल लैंदा हां...।"

50 स्वयं को देखें

उस दिन समीक्षा मीटिंग में नहीं जा पाई। उस मीटिंग में क्या-क्या हुआ उसकी जानकारी उसे फोन करके किसी ने नही बताई। समीक्षा ने ऊषा जी से कहा,

- "यह कौन सा तरीका है कम से कम हमें बताना तो चाहिए कि मीटिंग में क्या-क्या निर्णय लिया गया है, आखिर मैं संस्था की महासचिव हूँ।"

उसकी बात सुनते ही ऊषा बोली,

- "एक तो आप वहां आई नहीं दूसरा हमें दोषी ठहरा रही हैं। यह कौन सा तरीका है? यदि पद लिया है तो उसकी जिम्मेदारी निभाना भी तो आपका कर्तव्य बनता है। फिर छोटी-छोटी बातें तो चलती रहती हैं इसका अर्थ यह तो नहीं कि आप पीछे हट जाएं। थोड़ा सा झुकना सीखें। जहाँ मिलजुल कर काम करते हैं, वहां झट से क्षमा मांगने में क्या जाता है... दूसरों को शांत ही तो करना होता है।"

इसी बात को लेकर उनकी आधा घण्टा बहस होती रही। आखिर जब ऊषा ने क्षमा मांगी तब वह अपने घर वापिस आई।

घर आकर मंथन किया तो समीक्षा को ऊषा की हर बात सही लग रही थी। गलती सारी उसकी अपनी थी। उसने तुरंत उसको फोन मिलाया और क्षमा याचना करते हुए कहा,

- "आगे से मैं कोई गलती नहीं करूँगी। हम मिलकर काम करेंगे।"

51 अनुभव

नव्या और जैनी दादी के साथ सोई थी। वे दोनों रात भर इधर-उधर हिलती रही, इसी कारण दादी को नींद नहीं आई। वह उनको बार-बार रज़ाई से ढकती रही।

उसने सोचा, कि वह औरों को समझाती है... अगर नींद न आए तो राम-राम की माला जपो तो तुरंत नींद आएगी, आती-जाती साँस को देखो– तुरंत नींद आएगी... आदि-आदि। लेकिन आज सारे उपाय उसके स्वयं पर लागू नहीं हुए। रोज़ तो हो जाते हैं... पर आज नहीं। रात के तीन बज गए नींद का नामो निशान नहीं। शायद जिन लोगों को नींद नहीं आती उनके साथ ऐसा ही होता होगा। वे भूत-भविष्य में उलझे रहते होंगे। कभी गर्मी है तो कभी सर्दी है- कभी बाथरूम जाना है। यही तो होता है जब नींद नहीं आती। आज जब प्रत्यक्ष अनुभव में आया, तब उसने जाना लोगों की परेशानी का कारण। जब सास-माँ कहती थी, मुझे नींद नहीं आती तब वो बहुत से उपदेश देने लगती। आज उसे उनके कहे शब्द याद आ रहे थे जब सास माँ ने कहा था,

- “कोई बात नहीं, धीरज रख बेटी! सब कुछ पता लगेगा। अभी तक तो हरी-हरी चुगी है, सब समझ आ जाएगा।”

52 बच्चे के मुख से

दादी पूजा कर रही थी और पाँच वर्षीय निशू इधर-उधर घूमती हुई सैंडविच खा रही थी। एक पल के लिए वह दादी के पास रूकी और बोलने लगी,

- "तुम नीले-पीले-हरे, तुम गोरे क्यों नहीं होते। तुम इतने नीले जो हो तुम लगते कि जैसे कोई और ही हो।"

दादी ने सुना तो हैरान रह गई। तुरंत ही डायरी पेन उठा कर यह पंक्तियाँ नोट कर दी। फिर निशू से पूछा,

- "तुम किस को ऐसे बोल रही थी?"

तो हंसते हुए वह कहने लगी,

- "कृष्णा को।"

हैरान थी यह नन्हीं सी बच्ची क्या बोल रही है। फिर ध्यान आया, किसी ने सच ही तो कहा है- 'पूत के पैर पालने में ही पहचाने जाते हैं।' -दादी ने फिर उससे पूछा,

- "निशू! तुम बड़ी होकर क्या बनोगी?"

वह बोली,

- "दादी! मैं आपकी तरह कविताओं की किताब लिखूँगी...।"

53 धिक्कार

वह जैसे ही शाम को दफ्तर से घर वापिस आया तो आईना देखते-देखते स्वयं से बातें करने लगा- यार! यह व्हाट्सएप भी क्या चीज़ बनाई है... तकनीक कहां से कहां पहुंच गई। देखो! मैं अमेरिका में बैठा हूँ और दोस्त, परिवार सभी गाँव में रहते हैं। रोज़ मैसेज आते हैं, फेसबुस पर भी देखता हूं। लगता है- मैं दूर नहीं हूँ। फिर भी कभी-कभी न जाने मुझे क्या हो जाता है। मेरी माँ, मेरी गुड़िया सी बहन और पापा... उनकी यादें तड़पाने लगती हैं। ऐसा लगता है मेरे बचपन का दोस्त शंटू... जिसके साथ मैं गली में कंचे, छुपन-छुपाई खेलता था और कबड्डी भी... वह मुझे कभी नहीं मिलेगा। उसकी दोस्ती के बिना मैं अधूरा हूँ। फिर सोचता हूँ- मैं यहां आया किस लिए हूँ.. पैसे के लिए....। हां-हां पैसे के लिए। मैंने सभी अपने क्यों छोड़े हैं?... सिर्फ पैसे के लिए। सचमुच ऐसा ही है। धिक्कार है मुझपर। बीमार बूढ़े माँ-बाप को गाँव में छोड़कर मैं स्थाई रूप में यहां बसना चाहता हूं। मेरे अपने देश में क्या रोज़गार और पैसे की कमी है...? कमी हो भी... तो क्या मुझे खून के रिश्तों को ऐसे छोड़ देना चाहिए। नहीं न....? क्या पैसों से कभी अपनों का प्यार खरीदा जा सकता है? क्या मैसेज और वीडियो कॉल- मेरे माँ-बाप को हस्पताल ले जाएंगे- क्या सिर्फ़ पैसे भेजकर उनकी छाती को ठंडक पहुँचा पाऊँगा? ....नहीं न ? .....लगता है कि आज मेरा दिमाग सही हो गया है। मुझे वापिस अपने देश जाना है। यही सोचते हुए वह नेट पर वापिसी की टिकिट ढूँढने लगा।

54 माँ का कमरा

-"माँ! तुम्हारा कमरा तैयार करवा दिया। उसमें टी.वी., ए.सी, दो कुर्सी, मेज़, धार्मिक किताबें सब कुछ रखवा दिया। कल से यह कमरा मिंटू की पढ़ाई के लिए हो जाएगा और आप ऊपर के कमरे में आराम से रहना। यह लो! नया मोबाइल भी....।

माँ ने नज़रें नीची किए हुए मोबाइल पकड़ लिया। शाम को लगा- शायद मां इतने में भी खुश नहीं है। उसने फिर पूछा,

- "बताओ माँ! क्या चाहिए जो कहोगी वही हाज़िर कर दूँगा।

मां कहने लगी, "नहीं बेटा! कुछ नहीं चाहिए- मुझे तो गांव से ही अकेली रहने की आदत है, आराम से रह लूँगी"।- कहकर वो तुरंत ऊपर के कमरे में चली गई।

दादी के भाव की पोते मिंटू को भनक लग गई। वह तुरंत ही अपनी मम्मी के पास गया और कहने लगा,

- "मम्मी! मुझे ऊपर का कमरा चाहिए, दादी नीचे के कमरे में ही रहेगी।"

- "हाँ बेटा! मैं तो पहले से ही तेरे पापा से कह रही थी, माँ को नीचे ही रहने दो पर माने ही नहीं।"

आखिर मिंटू और उसकी मम्मी ने शाम के आने से पहले ही माँ को नीचे शिफ्ट कर दिया। जब शाम वापिस आए तो माँ उसे खरी-खोटी सुनाने लगी,

- "क्यों रे निक्कमे! तू मुझे मेरे पोते-बहू से अलग करना चाहता है...?"

शाम टुकर-टुकर कर दोनों की ओर देख रहा था कि यह हो क्या गया।

55 बेटी के शब्द

माँ अब भी अपने बच्चों का ध्यान आप ही रखती है क्योंकि बेटा-बहू दोनों कमाने जाते हैं। पहले वह एक का ध्यान रखती थी अब दो का रखती है। जब उससे घर में चार सदस्यों का काम नहीं होता था तो सोचती थी बहू आएगी पर...।

दूसरी तरफ ससुराल से घर आई बेटी को माँ ने कहा,

- **"तुम्हारी दो बेटियाँ हैं यदि एक बेटा भी हो जाता तो सुखी हो जाती...।"**

बेटी कहने लगी,

- **"मेरी दो बेटियाँ हैं तो तुझे क्या तकलीफ है, क्या तू अपने बेटे से सुखी है- अब दोगुना काम करती है- मुझे बेटा नहीं चाहिए। तुम पहले भी घर के कामों में पिसती रहती थी आज भी पिस रही हो .....बच्चों के बच्चे बड़े हो गए पर तेरा वही हाल है...। मुझे तेरी तरह सीनियर बाई नहीं बनना।"**

56 उसकी याद

उस दिन सर्वोदय भवन में समारोह की समाप्ति के पश्चात बाहर आकर देखा तो थोड़ा अंधेरा हो गया था। गपशप में ऐसे ही पंद्रह मिनट निकल गए। सभी साथी जा चुके थे। गायत्री के एरिया में जाने वाला कोई नहीं था और न ही कोई साधन मिल रहा था। आखिर...दूर से एक रिक्शा दिखाई दिया और वह भाई जाने के लिए भी तैयार हो गया। घर पहुंच कर ... गायत्री ने हक अदा करते हुए उससे पूछा,

- “ठीक है भैया?”
- "अगर आप कम भी दे देते मैं तो वह भी ले लेता। मैं कभी किसी से पैसों के लिए झगड़ा नहीं करता।"-रिक्शा वाले ने कहा।

इतना कहकर वह तो चला गया पर उसकी संतुष्टि भरे शब्द गायत्री के कानों में बजते रहे... ।

57 गलती पर गलती

जब हम किसी काम को बिना सोचे विचारे करते हैं तो गलतियां हो ही जाती हैं। संगीता के साथ भी वही हुआ। बेटी को ख़ुद ड्राईव करके ससुराल जाना था। संगीता ने कहा कि धुंध बहुत है, पहुंचते ही फोन कर देना। कुछ घंटों बाद आफिस से पति ने फोन करके पूछा, "क्या वह पहुंच गई ... श्वेता का फोन आया?"

- "नहीं आया... भूल गई होगी....."- संगीता ने कहा।
- "अभी पूछो, मैं तुम्हें फिर से फोन करता हूं।" (आफिस का फोन था उससे सिर्फ यूनिवर्सिटी के भीतर ही कॉल कर सकते थे।) संगीता ने बेटी को अपने मोबाइल से फोन किया पर व्यस्त था... नहीं मिला। वह नाश्ता करने बैठ गयी। आफिस से फिर से फोन आया तो उसने झुंझलाते हुए कहा,
- "नाश्ता तो कर लेने दो, मैंने फ़ोन किया था नहीं मिला।"
- " यह डी.ओ. आफिस का नंबर है?"- किसी ने पूछा।
- "ओ ..जी नहीं ...क्षमा करना।" शर्मिन्दा होते उसने जल्दी से रिसीवर रख दिया। थोड़ी देर बाद जब फिर से घंटी बजी तो संगीता झट बोली,
- "पता है अभी क्या हुआ.. किसी और का गलत नंबर लग गया और मैंने सोचा कि आपका है ..बिना 'हैलो' किए ही बोल दिया... नाश्ता तो कर लेने दो..."
- "मैडम! अब भी वही फोन है।" उधर से आवाज़ आई। उसने फ़िर से रिसीवर रख दिया। सब कुछ जानती थी.... कैसे बोलते हैं, कैसे बात करते हैं पर पता नहीं क्यों कैसे उस दिन वह गलती पर गलती कर बैठी।

58. दरवाज़ा

क्षण भर का क्रोध अपना नुकसान तो करता ही है साथ में दूसरों के दुख का कारण भी बनता है। ऐसे समय में कई बार बेजान वस्तुएँ भी हमारी प्रेरणा का स्रोत बन जाती हैं।
उस दिन जब किसी छोटी सी बात को लेकर अभिनव ने ईशा का कहना नहीं माना तो उसे क्रोध आ गया... पहले पैर ज़मीन पर पटकने लगी, फिर बर्तन पटकने लगी... जब क्रोध शांत नहीं हुआ तो दरवाजे पर उतारा... पूरे जोर से उसे बंद किया। ऊँची आवाज सुनते ही ईशा की दृष्टि कंपकंपाते अधखुले दरवाज़े से जा टकराई। वह कुछ देर के बाद पहले की भांति शांत हो गया। वह देखती रह गई और सोचा - मैंने इस बेजान पर अपना क्रोध उतारा...। दरवाजा चीखा... कराहा.. कांपा और फ़िर सामान्य हो गया। टूट भी जाता तब भी कुछ न कहता और मैं मूर्ख....अभी भी क्रोध में जल रही हूँ।
शांत कर दिया दरवाजे ने ईशा को...।

59. गुड़िया

नववर्ष का पहला दिन...पर पूरी बिल्डिंग में सन्नाटा..... कारण...? तीसरे माले पर गुड़िया का इकलौता, बाईस वर्षीय भाई जो कुछ दिन पहले भगवान ने छीन लिया था। चंचल सी गुड़िया..... जो हर वर्ष नववर्ष के आगमन पर सबसे ज्यादा उछलती कूदती थी, इस बार बंद थी घर के भीतर। कौन जाए... उसे बुलाए ...खुशियाँ मनाए...।

आखिर हिम्मत करके श्रीमति गार्गी ने ही उनका किवाड़ खटखटाया। उसी गुड़िया ने दरवाजा खोला और हंसते हुए कहा,

- "नमस्ते आंटी!-- हैप्पी न्यू ईयर"

गार्गी मुस्करा दी और उसे चाकलेट का डिब्बा दिया.....फिर आंखों में आंसू भर..... गुड़िया उसके सीने से लिपट गई... ।

60. भाव

दादी रामरत्ती के दोनों बेटे जब से अलग रहने लगे थे। तब से दादी घरों में मांग-मांग कर गुजारा कर रही थी। दीवाली का त्यौहार आने वाला था। दादी घर आई तो खाने-पीने का सामान लेकर भी खुश नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था वह कुछ और भी चाहती है पर संकोच वश कह नहीं रही। मेरे कई बार अनुरोध करने के पश्चात् वह बोली,

- "लाली! (बेटी!) कोई कांच की पुरानी चूड़ियाँ पड़ीं हों तो... पहन लूंगी... मेरे हाथ खाली हैं?

सुधा के पास पीतल की नई चूड़ियाँ रखी थीं। उसे उनका ध्यान आया। दादी को वह चूड़ियाँ दिखाई तो उसे पसंद आई और तुरंत पहन भी लीं और कहने लगी,

- “यह चूड़ियाँ तो लाली! बहुत सुंदर लग रही हैं।”- ढेरों आशीर्वाद देती हुए वह चली गई। उस समय उसके भाव ऐसे थे मानो उसे सोने की चूड़ियाँ मिल गयी हों।

61. माँ की बात

अक्सर सासु माँ बात-बात पर नसीहत देती रहतीं। उसका रोकना-टोकना संतोष को अच्छा नहीं लगता था। आज संतोष सोच रही थी कि वह ठीक ही तो कहती थीं। उनकी हर बात में उनका अनुभव बोलता था जिसे उसकी कच्ची सोच समझने में असमर्थ थी।

एक दिन सासु माँ संतोष के पास आई और कहने लगी,

- "ए संतोष! एक बात कहूं , इआ कविता लिखना ईब तो छोड़ दे। हाड़े तेरे आगे हाथ जोड़ूं बेटी ! ये आंखें काम आएंगी। आपां तो तेरे दिमाग वास्ते कमैं, आगे तेरी मर्जी।"

संतोष काम छोड़ कर लेट गई। थोड़ी सी देर लेट कर उठी तो सासु माँ पुन: ठंडी सांस भरती हुयी बोली,

- "सो ली.. हम भी गांव में यूँ ही करिआ करदे, नूं कैंहदी इतने टेढ़े होवेंगे.. दो निचली (चरखे पर सूत कातना) नी भर लूंगी... वे भी बरत न पाई। दूसरियाँ ने बरते।"

कितना गहरा चिंतन छिपा था उस चिंतामयी बात में...।

62 प्रबंधन

सुबह होते ही जब सोनिया बाहर निकली तो एक वृद्धा से राम राम हुई और बातों का सिलसिला शुरू हो गया।
सोनिया ने कहा,

- “मैं जब भी सैर करने जाती हूँ तब कोशिश करती हूँ कि एक ही लकीर पर चलूं। जब तक सही चलती हूँ तब तक विचार भी भूत भविष्य की ओर नहीं भागते, परन्तु जैसे ही लकीर से हट जाती हूँ तब विचार भी भूत भविष्य की ओर भाग रहे होते हैं। मैंने देखा है कि वर्तमान में रहने के लिए अनुशासन आवश्यक है। यदि स्वयं पर ही शासन नहीं, प्रबंधन नहीं तो मन संकल्प-विकल्प में उलझेगा ही.... मैं हर चीज़ का प्रबंधन करके चलती हूँ...।”
- “क्या आप वक्त का प्रबंधन जानती हैं?" - सोनिया की बात को बीच में काटते हुए उस मां ने कहा।
- “वक्त का प्रबंधन.... जीअअ... ओ-हो... एक घंटा हो गया बात करते हुए...पता ही नहीं चला मुझे। क्षमा करना।”

वह वृद्धा मुस्करा कर चल दी। ऐसा लगा जैसे उसने सोनिया को नसीहत भरा थप्पड़ मारा हो कि उपदेश देने की वस्तु नहीं ...ग्रहण करने की है।

63. भोला चेहरा

ज़िंदगी के पुराने पन्ने पढ़ते हुए रीमा को स्वयं की ही लिखी पंक्तियां पढ़ने को मिलीं, "हमें किसी एक जरूरतमंद की जितनी हो सके सहायता करनी चाहिए।" पंक्तियां पढ़ते ही उसे विचार आया कि उसके पास तो इतने कपड़े पड़े हैं, किसी ने पहनने भी नहीं हैं ... काम वाले लड़के को दे देती हूँ। तुरंत ही उसके आलसी मन ने कहा, "निकालने मुश्किल हैं, कल दे देना।"-फिर उसे कवि रहीम जी का वह दोहा ध्यान आने लगा...

"कल करे सो आज कर, आज करे सो अब"

वह जल्दी से उठी और पुराने साड़ी-सूट, पैंट-शर्ट इत्यादि की बड़ी गठरी बांध के रख दी। दूसरे दिन सुबह जब वह लड़का आया तो जाते हुये रीमा ने उसे वह कपड़े दे दिए। कपड़े लेकर वह बहुत खुश हुआ और कहने लगा,

- "सभी काम आ जाएंगे जी, घर में माँ है... बहन है..., अब मुझे खरीदने नहीं पड़ेंगे....।"

वह चला गया..... रीमा आज भी उसका चेहरा याद करके सारे काम तुरंत कर लेती है।

64. समझदारी

बात पुरानी है नया खाता खुलवाना था। स्कूटर बैंक के सामने थोड़ी दूरी पर खड़ा कर दिया। काम होने के बाद जैसे ही बाहर निकले तो देखा -स्कूटर वहां नहीं था। इधर उधर देखा पर कोई सुराग नहीं मिला। आखिर किसी ने राय दी, "शिकायत लिखवा दीजिये।" उन्होंने शिकायत लिखवा दी और पूछा,

- "कब तक उम्मीद है मिलने की?"
- "घबराने की जरूरत नहीं, विश्वास रखिए... थोड़ी देर में वहीं-कहीं मिल जाएगा।"

आखिर उनकी बात पर भरोसा करते हुए वो फिर से बैंक के आसपास ढूँढने लगे। वहां से काफी दूरी पर एक स्कूटर गिरा पड़ा दिखाई दिया। पास जाकर देखा तो वह तोड़-फोड़ करके फैंका गया स्कूटर उनका ही था। आश्चर्य हुआ कि उनकी बात सही निकली। अब समय था जो शिकायत लिखवाई थी उसे हटवाया जाए। उन्होंने चौकी में जा कर कहा,

- "आप तो अंतर्यामी निकले आपने जैसे कहा था ठीक वैसे ही स्कूटर मिल गया है। कृपया शिकायत काट दीजिए।"
- "काट दीजिये? .. ऐसे कैसे काट दें। जब एफ.आई.आर. दर्ज करवाई है तो स्कूटर तो कोर्ट से ही मिलेगा।"
- "कोर्ट से?"
- "हां, कोर्ट से।... शेष आप भी समझदार हैं...जैसे जी चाहे ले सकते है।"

आखिर ... समझ गये...। समझदारी से तुरंत निपटारा हो गया।

65 यह मन

गोपाष्टमी के दिन गौशाला की परिक्रमा करते हुए पूरे ग्रुप के सदस्य आगे निकल गए और वह सबसे पीछे चल रही थी। अपने से आगे चल रही एक बहन पर जैसे ही नज़र पड़ी तो देखा - वह एक तूड़ी के भरे ट्रैक्टर के पीछे खड़ी हो गई। जल्दी से उसने अपने बिखरे हुए बालों पर कंघी फेरी और होंठो पर लाली लगाई। फिर चलते-चलते उस कंघी को पर्स में डाल कर आगे चल रही औरतों के साथ जा मिली।

वह उनके पीछे चल रही थी। परंतु सरिता का ध्यान भजन से हट कर बार-बार उसी चित्र का चिंतन करने लगा। तभी चुपके से अंतरात्मा ने झंझोड़ते हुए कहा- औरों के दोष तो तुम्हें खूब दिखाई देते हैं कभी अपने को तो देख.....। जब उसने कंघी फेरी उसका ध्यान तो परिक्रमा की ओर था। तभी तो वह झट से अपनी सखियों के साथ जा मिली और तुम्हारा ध्यान अब तक वहीं अटका हुआ है।

66 वह लड़की

कुंभ के मेले में लगे शिविर में स्वागत कक्ष पर समता की ड्यूटी थी। लगभग बीस इक्कीस वर्षीय छोटे से कद की, दुबली-पतली, साधारण सी लड़की, सूती साड़ी पहने हुए उसके सामने खड़ी थी। उसके हाथ, नाक, कान में कोई श्रृंगार की वस्तु नहीं थी। अपने पिता व चाचा के साथ आई थी। उसे देख कर समता को लगा कि शायद इसे कोई आर्थिक सहायता की जरूरत होगी...पर जैसे ही उसे कुछ देने के लिए हाथ बढ़ाया तो कहने लगी,"नहीं नहीं.. हमें रूपये नहीं चाहिए।"- उसके पिता ने कहा,

-"हम तो बस यहां तीर्थ दर्शन करने आए थे, सो हो गए। इस बेटी का पति नहीं है...भजन, ध्यान में लगी रहती है।"

और ...उसके बाद वह बोल नहीं पाया। समता सीट छोड़ कर खड़ी हो गई। उन डबडबाई आंखों को देने के लिए कुछ नहीं था। उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोली,

- "सब ठीक हो जाएगा...पुस्तकें पढ़ा करो। ईश्वर मंगल करेंगे।"
- "इसे पढ़ना नहीं आता।" -उसके पिता बोले।

वह सोच में पड़ गई। अनजान शहर में इसकी कैसे क्या सहायता करूं....फिर जिसकी कोई चाहत ही न हो उसे कोई दे भी क्या सकता है। तुरंत ही वह लोग चल पड़े। जब उसके पिता चार कदम आगे बढ़ गए तो वह समता के पास आकर बोली,

- "तुम फिर कब मिलोगी?"

वह...क्या कहती उसे.... 12 बर्ष बाद कुंभ में मिलूँगी या तुम मेरे घर आना...अथवा मैं तेरे घर आऊँगी... कोई उत्तर न दे पाई समता उसे। उसके शब्दों ने उसे नि:शब्द कर दिया।

67 उसकी मुश्किल

घर में बर्फ मांगने आई बाई से सरिता ने कहा,

- "एक बात कहूं ... बुरा तो नहीं मानोगी?"
- "जी ...कहिए ।"
- "तुम यह रोज़ - रोज़ बर्फ मांगने क्यों आती हो. ...जानती हो ऐसे मांगना अच्छा नहीं होता... घर में जो हो - जैसा हो - वैसे की आदत डालनी चाहिए।"

सरिता की बात सुनते ही उसकी आँखें भर आईं और रूँधे स्वर में बोली,

- "क्या करूँ जी, ये छोरियां हैं न जो.. ये टिकने नहीं देतीं .... कोठियों में काम करने जाती हैं तो सब कुछ देख कर मचल उठती हैं... और तो कुछ नहीं माँगतीं, मैं समझा देती हूँ पर ठंडा पानी मांगती हैं। आप तो जानती हैं मैडम! गर्मी बहुत है...हर रोज़ तो बर्फ भी खरीदनी मुश्किल है जी.."

इतना कहकर उसकी आंखो से आँसूं छलकने लगे।

68. धारणाएं

कुछ लोग जोश में आ कर कहीं भी कुछ भी बोल देते हैं। जैसे कि मैं तो भूल कर भी रेहड़ी बाजार का खाना न खाऊँ ..छी.... गंदे से हाथों वाले उस व्यक्ति से पानी कभी न पीऊं।..... इतना घटिया स्वभाव है उसका ..मैं तो उससे भूल कर भी बात न करूँ... वगैरह वगैरह्। सब की अपनी-अपनी धारणाएं तो होती हैं। पर पता तब चलता है जब किसी मजबूरी के कारण अपनी ही कही बातें झूठी हो जाती हैं। बोलते समय हम इतना भी नहीं सोचते कि हम कह क्या रहे हैं।

संतो के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ। रसोई घर में थोड़ा सा पानी था। वह उसने बिखेर दिया। जैसे ही घड़ा नल के नीचे किया तो पानी जा चुका था। मिस्त्री भी घर में काम कर रहे थे। अन्य किसी भी घर से मांगना उचित नहीं समझा। सोचा - बिसलेरी ले लेंगे।

आखिर मिस्त्रियों को तो उसने ऊपर की टंकी का पानी पिला दिया। परन्तु अपने लिए.. मार्केट जाने वाला कोई नहीं था। जब प्यास से व्याकुल होने लगी तो चुपके से स्वयं भी टंकी का वही पानी पी लिया जिसे रोज़ वह गंदा पानी कहती थी।

69 भाव और व्यवस्था

कभी-कभी व्यवस्था भाव को समझ नहीं पाती। समीक्षा को सौभाग्यवश हरिद्वार में हरिहर आश्रम के गेट पर चरण पादुका सेवा मिल गई। हजारों भक्त रुद्राक्ष पेड़ की परिक्रमा, पारद शिवलिंग व गुरुदेव के दर्शन हेतु आ जा रहे थे। उसी समय एक पति-पत्नी का जोड़ा, जूते रखने हेतु पास आया। पति ने अपने जोड़े उतार कर पादुका घर में रख दिए। पत्नी ने अपनी चप्पल उतारी फिर पति की उठाई और उसके नीचे अपनी चप्पल छिपा दी। ऐसा करते हुए जैसे ही समीक्षा ने देखा तो हंसते हुए कहा,

- "आप तो बड़ी चुस्त हैं, अपनी चप्पल छिपाकर रख दी कि गुम न हो जाए और पतिदेव का जोड़ा ऊपर रख दिया...।"
- "नहीं - नहीं बाई जी! इनकी चप्पल के ऊपर अपनी चप्पल कैसे राखूँ..?"

70 सॉरी

जैसे ही मैंने प्रतिभा को फोन किया तो दो मिनट बात करने के पश्चात ही कहने लगी,

- "अच्छा ! जल्दी में हूँ , मुझे हस्पताल जाना है। डाक्टर से समय लिया हुआ है। रख रही हूँ... बाद में बात करूँगी।"
- "अरे ! हस्पताल जा रही हो, मुझे भी जाना है। तेरे साथ तो चली जाऊँगी, नहीं तो मुझे दिखाने के लिए किसी के पास भी समय नहीं। मैं भी चलूँ तुम्हारे साथ ?" -कल्पना ने कहा।
- "अरे ! हाँ - हाँ , क्यूं नहीं... यह भी कोई पूछने की बात है। बस! गाड़ी निकाल रही हूँ, दस मिनट में तुम्हारे पास पहुँच जाऊंगी।"

प्रतिभा समय का इतना ध्यान रखती है कि सही दस मिनट बाद हार्न सुनाई दिया।

- "आ रही हूँ... बस दो मिनट...।"

(कितनी जल्दी-जल्दी की... फिर भी कल्पना को बाहर आने में दो की जगह दस मिनट लग गए। प्रतिभा का क्रोध भरा चेहरा गाड़ी में बैठते हुए उसे साफ़ नज़र आ रहा था।) खैर! जैसे ही हस्पताल पहुंचे तो रिसेप्शनिस्ट ने बताया,

- “आप पंद्रह मिनट लेट हो.. आपका नंबर कट चुका है।”
- “प्लीज़! मैडम.....यदि?”

- "सॉरी! आप कल आइए। हां ! लेट नहीं चलेगा... निर्धारित समय से दो मिनट पहले पहुँच जाना।"
- "जी.. ।"
- "प्रतिभा! सॉरी ...मेरे कारण...।"
- "क्या मेरे कारण.. समय पर तैयार नहीं हो सकती थी...?"
- "हां! ठीक कह रही हो तुम..।"

पर सही शब्दों में उसकी डांट खाना कल्पना को अच्छा नहीं लग रहा था। हस्पताल से बाहर निकल कर प्रतिभा मार्केट में कोई अन्य काम करने चली गई और वह भी डाक्टर को बिना दिखाए ही वापिस आ गई। गुस्सा कल्पना को भी आ रहा था... क्या उसका हस्पताल में इस प्रकार मुझे डांटना उचित था..? जब क्रोध थोड़ा शांत हुआ तो धीरे से मन कहने लगा, "हाँ - हाँ - हाँ.. ।"

71. क्रोध

सुमेधा पढ़ने लिखने का काम कर रही थी। पतिदेव दूसरे कमरे में टीवी देख रहे थे। उनकी आवाज़ उसके काम में खलल डाल रही थी।

- "अरे भई! टीवी की आवाज़ कम कर दो ... ।"

सुमेधा ने जब कहा तो ...उधर उन्हें सुनाई नहीं दिया। थोड़ी देर बाद वह फिर से चिल्लाई,

- "सुनाई नहीं दे रहा क्या... आवाज़ कम कर दो।"

फिर भी कम न हुई तो वह क्रोध में उठी और पैर पटकते हुये उनके कमरे में पहुँच गई। इससे पहले कि वह कुछ बोलती, जा कर देखा- टीवी चल रहा है और महाशय नींद में जोर-जोर से खर्राटे मार रहे हैं...।

- "हूँअअ...।"

सुमेधा ने टी वी बंद किया और अपने गाल पर जोर से दो तमाचे मारे.. ।

72 उत्थान

जितनी बातें होती हैं महिला उत्थान की उससे भी कहीं अधिक प्रकाशित होती हैं पतन की।

नेहा ने देखा- होली के पावन पर्व का वह दिन। जब बारह मोटर साइकिलों पर बैठे युवा लड़के गली-कूचों में हुड़दंग मचा रहे थे। किसी पुलिस वाले की हिम्मत नहीं थी कि वह उन्हें रोक सके। ऐसे में होली खेलना तो दूर की बात, किसी लड़की की इतनी भी हिम्मत नहीं थी कि वह बेधड़क पास के बाज़ार तक जा सके।

नेहा के देखते-देखते एक लड़की जो एक्टिवा पर जा रही थी, उन युवाओं में से एक ने...उसके ऊपर पूरे ज़ोर से अंडा दे मारा। नेहा देखती ही रह गई। उसने 100 नंबर पर डायल किया पर किसी ने उठाया नहीं, वह सोचने लगी, बस में सफर करो तो जिन सीटों पर "महिलाओं के लिए" लिखा होता है उन पर भी पुरुष अपनी धाक जमा लेते हैं। क्या यही उत्थान है? कहाँ सुरक्षित है नारी?

अब भी भरी दोपहरी में गेट पर खड़ी नेहा देख रही थी उस लड़की को, जो ड्यूटी के बाद.. सहमी-सहमी सी... तेज़ चाल से ..घर जा रही थी...।

73 गुरू ने कहा

गुरू मां को प्रणाम करते ही उसके टप-टप आँसू बहने लगे। गुरू मां पहले तो मौन रही फिर पूछा,

- "क्या हुआ?"
- "बहू.....उससे परेशान हूँ।"
- "तो रोने की क्या बात है..... झगड़ती है क्या?"
- "नहीं.."
- "काम नहीं करती?"
- "नौकरी करती है।"
- "बोलती नहीं?"
- "मौन रहती है।"
- "और तुम?"
- "मैं भी मौन रहती हूँ।"
- "वाह ! इससे अच्छा क्या होगा? दोनों मौन रहती हो। फिर समस्या कहाँ है?"
- "संवाद नहीं होते...।"
- "हा - हा- हा ...।" (गुरू मां खिलखिलाकर हँसने लगी)

रिश्तों की मिठास को बनाए रखने के लिए ज़्यादा संवाद ठीक नहीं होते। 'स्व' से दूर हो जाओगी तुम।

'सकारात्मक सोचो....सकारात्मक।'

74. मेरा गाँव

बहुत याद आता है अपना छोटा सा गाँव...,बबीता सोच रही थी। जहां एक दूसरे को देखते ही फूलों की भांति लोग खिल उठते.., गले मिलते और दु:ख-सुख पूछते थे परिवारजनों का.. । कोई वस्तु अगर थोड़ी सी ज्यादा मात्रा में दिखाई देती तो पड़ोसियों में बांटकर खाते। तीज-त्योहारों पर बड़े बुजुर्गों की राय ली जाती। किसी को आंटी-अंकल नहीं कहा जाता था। बस... चाचा - चाची, ताया - ताई , दादा - दादी पुकारा जाता।

जब से शहर आई हूँ तो देखती हूँ ...सब अपने आप में मस्त हैं। किसी के घर में क्या हो रहा है किसी को कुछ लेना-देना नहीं। दु:ख-सुख कोई नहीं सांझा करता। पड़ोस में चाचा-ताया, कहना-सुनना तो दूर की बात है इतना भी नहीं पता कौन आंटी, अंकल रहते हैं। बाहर झाँको तो लंबी-चौड़ी सूनी सी सड़कें दिखाई देती हैं या फिर हाए-बाए करते हाथ दिखते हैं और कुछ नहीं अपने गांव के जैसा.. ।

75. छुअन

वह मुस्करा कर अरुण की ओर निहार रही थी। वह भी मौन खड़ा उसकी ओर ताक रहा था। उसकी पावन नज़रों में औरों जैसी कोई गंध नहीं थी।

जब लगभग दो मिनट का समय बीत गया तो अरुण के मुख से चंद शब्द फिसल कर उसके कानों तक पहुंच गये ...।

- "मैं तो तुम्हें छू भी नहीं सकता...।"
- "मैं तो छू सकती हूँ....।"

इतना कहते ही उसने अपना दायाँ हाथ अरुण के शीश पर रख दिया.... और हंसते हुए कहा,

- "मंगल हो तुम्हारा।"

फिर तो अरुण ने भी झट से झुककर धरा को छू लिया।

76 छि: छि:

हम अमुक संत जी के शिष्य हैं जी। आप लोगों से बात करके अच्छा लग रहा है। फिर वह प्रवीण जी से पूछने लगे, "आपके गुरू कौन हैं जी? इससे पहले कि वह उत्तर देते उन्होंने फिर से बोलना शुरू कर दिया,

- "जी ! हमारे गुरू जी का स्टैण्डर्ड बहुत ऊंचा है ...वहां एकदम बढ़िया खाना और ए.सी.कमरे हैं। 'क' संतों की तरह नहीं कि ज़मीन पर सुला दिया...हल्का खाना दे दिया। ना जी ना... आप आओ हमारे.... आपको.....।"

वह भाई अभी बात कर ही रहा था कि प्रवीण जी ने क्षमा मांगते हुए कहा,

- “आप अपने गुरु की प्रशंसा कर रहे हैं बहुत अच्छी बात है, परन्तु आप जो दूसरे की बुराई कर रहे हो भाई! वह गलत बात है। जरा-सा सोच कर देखिए ..आप कह क्या रहे हैं ....यह तो वही बात हुई कि हम किसी को कहें कि हमारे घर आइए.. देखिए.. क्या आलीशान बंगला है... देखना कितना बढ़िया फर्नीचर है.. हम क्या-क्या बढ़िया माल खाते हैं...। पड़ोस के पवन की तरह नहीं कि घटिया सा मकान.. टूटी सी गाड़ी...आप हमारे आइए। छि: ...छि:...!”

खैर ! उसे तुरंत ही अपनी गलती समझ आ गई और उसने क्षमा मांग ली। वह सचमुच किसी महान गुरु का शिष्य था।

77. आशीर्वाद

सुबह सात बजे जैसे ही अनु गाय को गुड़ देने के लिए बाहर निकली तो एक वृद्धा उसके पास आकर पूछने लगी,

- "रूपी का घर कौन सा है? मैं भूल गई।"
- "नंबर कितना है?" - अनु ने पूछा।
- “नहीं पता... सेक्टर 71 है न?”
- “जी हां..।”
- “उसने फोन नंबर लगाया पर नहीं मिल रहा था।”
- “आप रुकिए ... मैं अपने फोन से लगाकर देखती हूँ।”

अनु अंदर से मोबाइल ले आई। जैसे ही नंबर मिलाया तो उनका पता चल गया। फिर वह वृद्धा कहने लगी,

- “मैं गांव से आई हूँ। सोचा- सवेरे-सवेरे तो वह मिल जाएगी फिर अपनी ड्यूटी पर चली जाती है। बुआ हूँ मैं उसकी।”

- “जी।”

थोड़ा आगे जाकर अनु ने उसे उनका घर समझा दिया। वह अनेक आशीर्वाद देती हुई पीछे मुड़-मुड़ कर देख रही थी। अनु का मन जो घर के भीतर किसी बात को लेकर उदास था उसके आशीर्वाद से प्रफुल्लित हो उठा। उस माँ ने उदासी, चिड़चिड़ापन छीन कर उसकी झोली खुशियों से भर दी।

78 मेरा तेरा आदमी

लम्बी तीर्थ यात्रा करने के पश्चात वापिस स्टेशन तक आते हुए वह एक ही आटो रिक्शा में इकट्ठे सफर कर रहे थे। एक औरत जो लगभग चालीस वर्ष की होगी वह पास बैठी सत्तर वर्षीय वृद्धा को बोल रही थी,

- "मैंने कहा था न कि किसी को साथ मत लेना... उस बूढ़ी औरत को साथ में ले लिया तुमने...गांव से क्यों लेकर चली थी उसे... अब देखो गुम हो गई न मेले में?"
- "मुझे क्या पता था कि ऐसा होगा... कोई बात नहीं मिल जाएगी। अभी वो लोग गए हैं ढूँढने के लिए साथ में ले आएंगे।"
- "तुझे लगता है कि कोई बात नहीं ...मेरा आदमी तो ढूंढ रहा है न.. तेरा आदमी तो साथ है। तेरा तो कुछ नहीं गया.. मेरा आदमी तो वहीं पर रह गया न... अब पता नहीं आने में कितनी देर लगेगी...।"- चालीस वर्षिया औरत ने उत्तर दिया।
- "यह आपकी क्या लगती है?" पास में बैठी अल्पना ने उस चालीस वर्षीया औरत से पूछा।
- "सास।"
- "फिर इनका भी तो बेटा है .. यह मेरा आदमी - तेरा आदमी क्या बोल रही हो?"

79 बात झाड़ू की

घर में दुकान किए कुछ ही दिन हुए थे। एक दिन बरसात के पानी से आंगन गीला हो गया। मां ने जल्दी से झाड़ू उठा लिया। अमित ने कहा,

- "मां! बाहर आंगन में तुम झाड़ू नहीं लगाओगी, मुझे दो।"
- "नहीं बेटा! देर हो जाएगी.. तुम अभी नहाए भी नहीं... कोई ग्राहक आ गया तो? जाओ नहाओ तुम...झाड़ू मुझे लगाने दो।"
- "मैंने कहा न... तुम्हारी कमर में दर्द हो जाएगा, तुम नहीं झुकोगी.. मुझे लगाने दो।"
- "बेटा! जो झुकता है वही पाता है।"-माँ मुस्कराते हुये बोली "देखो! जब नौकरी होती है तो व्यक्ति बाहर अकेले काम पर जाता है। "वर्षा आओ -आंधी आओ" बंधी तनख्वाह हाथ में आ जाती है परन्तु जब कोई घर में दुकान करता है तब पूरे परिवार को लगना पड़ता है ...तब कहीं जाकर कमाई पल्ले पड़ती है... समझे....।"

मां बाहर झाड़ू देने लगी और नहाते समय मां के शब्द अमित के कानों में गूंजने लगे थे..।

80. महिला दिवस

महिला दिवस पर सेक्टर-10 में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हुआ यूं पहले तो आयोजन कर्ताओं द्वारा मंच पर ही चार पुरुष और सिर्फ एक औरत बिठाई गई थी। दूसरी बात पहले पुरुषों के बोलने का नंबर लगा। उन चारों ने महिलाओं के अधिकारों पर इतने लंबे चौड़े भाषण दिए कि एक महिला को उठकर याद दिलाना पड़ा,

- "सर! आप महिला दिवस पर बोल रहे हो और महिलाओं का हक छीन रहे हो। समारोह समाप्ति के सिर्फ बीस मिनट बाकी बचे हैं। मंच पर हमारा बोलना तो दूर की बात आप तो बराबर बैठी महिला का भी हक छीन रहे हो... उन्हें तो बोलने का मौका दो। कृपया आप बैठिए।"

इतने में दूसरी महिला उठकर कहने लगी,

- "आपके भाषणों से महिलाओं को अधिकार नहीं मिलने वाले...अभी तो महिलाओं को बोलने का अधिकार .....?"

आखिर बड़ी मुश्किल से थोड़ा सा समय मिला। सच्चाई यही है कि बातें होती है बड़ी-बड़ी परन्तु अधिकार मिलते नहीं, छीनने पड़ते हैं ...।

81. औपचारिकता

कई बार रिश्ते दूर होते हुए भी इतने नजदीक होते हैं कि बीच में दूरी नाम की कोई चीज़ नहीं होती। महीने, वर्षों बीत जाएं फिर भी इतने पास होते हैं कि बात करते ही लगता है जैसे कभी बिछड़े ही नहीं थे। रूपेश को भी ऐसा ही लग रहा था कि रवि को मिले हुए लगभग अठारह साल हो गए। तब हम पार्क में इकटठे बैडमिटन खेला करते। लम्बे समय बाद... भला हो इस फेसबुक का जो मुद्दतों बिछड़े हुए मेरे साथी से मिला दिया। बस फिर लाईक कमेंट्स हो गए शुरू...। कुछ दिन पहले अचानक ही वह रुपेश से मिलने आ गया। बातचीत के दौरान रवि कहने लगा,

- "यार! कभी-कभी तुम्हारी याद बहुत आती थी।"
- "हां! तभी तो तुम बीसियों लोगों के कमेंट्स जवाब में "श्री नरेश जी, श्री महेश जी थैंक्स, लिखते नहीं थकते थे और मेरे ... मेरे नाम के साथ "न श्री, न जी" लगाने का कभी कष्ट नहीं किया
- "हा - हा ... देख! तेरे नाम के आगे पीछे कभी कुछ नहीं लगाऊंगा .. समझे...। अरे !....श्री और जी तो औपचारिकता के शब्द हैं। तुम... तुम तो मेरे अपने हो...कभी मुझसे दूर नहीं हुए। अपनों में भला औपचारिकता कैसी...।" - रवि ने कहा।

उसके स्नेह भरे शब्द सुनकर रूपेश के बोलने का कोई अर्थ नहीं रह गया था।

82. वह बोली

- "क्या यह बटेर की तरह मेरी ओर टुकुर-टुकुर ताक रही हो .....जाओ अपना काम करो।"

पंद्रह वर्षीय लड़की सीमी से जब प्रिया ने कहा तो वह चली गई और कपड़े संभालने लगी। थोड़ी देर बाद जब वह मक्खन लगाकर ब्रैड बना रही थी तो प्रिया ने फिर टोका,

- "चार ब्रैड क्यूं बना रही हो..मान्या तो दो ही खाती है।"
- "नहीं - नहीं मैडम! आपके जाने के बाद दिन में यह चार ब्रैड खाने लगी है।" सुनकर प्रिया चुप रही। बीस मिनट बाद उसने अपनी बेटी से पूछा तो वो कहने लगी,
- "दो मैंने खाए हैं और दो दीदी ने खाए हैं।"

प्रिया ने सीमी से पूछा - "मान्या ने खा लिए।"

- "हाँ- हाँ! चारों खा लिए।"
- "झूठ बोलती हो.. सच बताओ।"
- "दो मैंने खाए हैं।"
- "तुमने क्यूं खाए? बताओ तो.. चोरी क्यूं करती हो...तुम्हें तीनों समय रोटी देती हूँ..देती हूँ ना... बोलो?"

प्रिया से नज़रें मिलाकर वह बोली, "दो-दो रोटी देती हो...सारा दिन काम करती हूँ... आप कोई काम भी नहीं करती फिर भी चार-चार खाती हो।"

इतना कहकर उसने नज़रें झुका लीं।

83 प्रशंसा

कहते हैं व्यक्ति भाव का, प्रशंसा का भूखा होता है। भाव में वह सात समंदर पार करने की हिम्मत रखता है। प्रशंसा चाहे पल की हो.. झूठी हो - सच्ची हो.. वह जादू तो करती है। ऐसा ही कुछ साया के साथ हुआ जब वह किसी दुकान पर टाइपिंग करवाने गई तो देखा - वह दुकान तो तीसरी मंज़िल पर थी। उसने फोन पर बात करना भी उचित नहीं समझा... सोचा - कई दिन का काम है..सीढ़ी चढ़ना मुश्किल है। आखिर वह वापिस घर आ गई। दूसरे दिन फोन पर बात तय हुई कि वह टाइपिस्ट नीचे आकर मैटर ले लिया करेगा। साया को ठीक लगा। वह पहुंच गई तो महाशय जी नीचे आ गए। उसने मैटर दिखाते हुए कहा,

- “यह कुछ आध्यात्मिक चिंतन की पुस्तक का काम है। रेट बता दीजिए?”

टाइपिस्ट भाई ने मैटर को थोड़ा देखा और कहने लगे,

- "दफ्तर भले ही तीसरी मंज़िल पर है दीदी! पर आप यदि मेरी दुकान पर आएंगी तो अच्छा रहेगा ...वह पवित्र हो जाएगी.. देखना आप आराम से सीढ़ी चढ़ जाएंगी.. आप आइए..” - मुस्कराते हुए वह कहने लगा।

बस ! इतना सुनते ही साया सीढ़ी चढ़ने लगी। जिस ऊंचाई को देखकर उसे डर लग रहा था वह पता भी नहीं चला.. . तीन मिनट में वह ऊपर पहुंच गई।

84. नसीहत

चांदनी बहुत अच्छी वक्ता है। उसका बयां करने का एक अपना ही अलग अंदाज है। उसके शब्द लोगों के दिलों में घर बना लेते हैं लेकिन कभी-कभी हंसी-मजाक में वह सामने बैठे हुए किसी श्रोता को बहुत हल्के स्तर के शब्द भी बोल देती है। जो कई बार वहां उपस्थित जनों को अच्छे नहीं लगते। कुछ दिन पहले भी ऐसा ही हुआ था। आखिर समारोह की समाप्ति पर एक विद्वान जो पंजाब यूनिवर्सिटी से रिटायर्ड प्रोफेसर हैं उन्होंने चांदनी को अपने पास बुला कर कहा,

- "बेटा! एक बात कहूं तो बुरा तो नहीं मानोगी?"
- "नहीं सर! आप चार कहिए।"
- "आप इतना अच्छा बोलती हैं कि आपके शब्द मेरे कानों में गूंजते रहते हैं और उससे भी कहीं अधिक वह दो शब्द जो किसी का उपहास उड़ाते हैं। याद रखना बेटी ! वक्ता जितनी जल्दी से अच्छे शब्दों द्वारा ऊपर चढ़ता है उससे भी कहीं अधिक जल्दी नकारात्मक प्रभाव द्वारा, श्रोताओं के उर से उतर भी जाता है ...।"

85. खुशी की चेन

अनुभव कहता है जब हम खुश होते हैं तब पूरा वातावरण भी महकने लगता है इसके विपरीत जब दुखी होते हैं तब चारों ओर भी चुप्पी छाई रहती है।

31 दिसंबर का उदासी भरा दिन था। न जाने क्यों चाह कर भी तिनका भर खुशी पास न आ रही थी। रात को नौ बजते ही समता बिस्तर पर करवटें लेने लगी। उस रात एक गुलाब के फूल जैसा गुलाबी सपना आया। बस..उसी से मन खुशी से झूमने लगा। एक जनवरी का दिन...जल्दी से उठी और अधूरे पड़े कई काम समेट दिए। नहा धोकर पूजा समाप्ति के पश्चात अंजलि के पास जा खड़ी हो गई। जैसे ही वह उसको निहारने लगी तो वह समता की तरफ देखकर मुस्कराने लगी।

- "बता तेरी क्या सहायता करूं ..?" -जैसे ही समता ने उससे पूछा तो वह बोली,
- "मेरी... मेरा तो कोई काम नहीं।"

इतना कहते ही वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। सांवले से रंग में वह बहुत सुन्दर लग रही थी। उसके बाद तो जैसे उसे पर लग गए थे। जल्दी-जल्दी काम करने लगी और उसने पूरी रसोई चमका दी। समता हैरान थी इसे आज हो क्या गया है। शायद उन्हीं शब्दों को जादू था जिन्हें सुनकर वह खुश-खुश नज़र आ रही थी। घर का पूरा वातावरण ही बदला गया था।

86 बरसात का दिन

बरसात हो रही थी। शिखा छोटी बेटी के संग बरामदे में खड़ी सोच रही थी कि पहले सभी घरों में गेट बरामदे के बाद अंदर लगा होता था। जब भी कभी बरसात शुरू हो जाती तो आते-जाते राही बरामदों में ठहर जाते और बरसात से बच जाया करते लेकिन आजकल हर घर के बरामदे के बाहर बड़ा सा लोहे का गेट लगा हुआ है जिस कारण कोई भी प्राणी बरसात से बच नहीं सकता.. .यही सोच सोचते हुए शिखा छाता लेकर. .... बेटी के संग गेट पर जा खड़ी हुई। उसने जब बेटी से कहा,

- "देखो! पेड़ के नीचे खड़ी हुई वह गाय कैसे भीग रही है... उस किनारे दीवार से सटा हुआ कुत्ता भी कांप रहा है।"

तब छोटी सी बेटी बड़ी मासूमियत से बोली,

- "यदि हम सामने छत बना दे तो सारी गाएं कुत्ते उसके नीचे बैठ सकते हैं।"

87. छोटी सी ज़िद

न जाने क्यूँ उस दिन सुबह से ही सुविधा के मन ने एक ज़िद पकड़ रखी थी.. "मुझे तुम्हें देखना है... मुझे तुम्हें देखना है... किसी भी तरह ...इसी वक्त... पर कैसे देखूँ ...कहां से देखूँ.... वर्षों हो गए ....न कोई पता?"

आखिर सोचा- गूगल बाबा किस काम के ....चलो ! कोशिश करके देखती हूँ।

नेट खोला... बचपन में बिछुड़े उस नाम के भांति-भांति के चेहरे दिखाई दिए। किसी की उम्र सोलह वर्ष.. किसी की बीस-पच्चीस तो किसी की पैंसठ ... ।

उन्हें देख कर सुविधा मुस्कराने लगी क्योंकि उसे तलाश थी पचपन की....। बहुत से चेहरे मिले पर तुम्हारा नहीं। फिर से कोशिश की .. आखिर... भीतर से खिलखिला उठी वह...उसका चेहरा देख कर..। 'मिल गया... मिल गया।' जल्दी से क्लिक किया.. फिर तो सुविधा और उसके ...एक ही गांव का ...नाम भी मिल गया था .... । इसी खुशी में उसके संग-संग नन्ही सी ज़िद भी नाचने लगी थी..।

88. मेरे पापा

सुबह नौ बजते ही नरेंद्र ड्यूटी पर निकल जाता है। उसकी माँ सारा दिन घर के काम में जुटी रहती हैं। सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त पापा रोज़ घर में उसकी माँ के साथ छोटे-मोटे कामों में हाथ बँटाते हुए अक्सर एक ही बात कहते हैं-

- 'मैं तो कुछ भी नहीं करता।'

नरेंद्र को पापा की यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती। सोच रहा था..'पापा ने अपनी प्रत्येक जिम्मेदारी को अच्छे से निभाया है और निभा रहे हैं। मुझे कमाने योग्य बनाया। थोड़ी तनख्वाह में छोटी बहन को पढ़ा-लिखा कर डाक्टर बना दिया। इससे भी बढ़कर उनकी स्वयं की आवश्यकताएँ नाम मात्र हैं। सर्वसम्पन्न घर में.... कड़कती ठंड में उन्हें ब्लोयर नहीं चाहिए..। न ही उन्हें गीजर का गर्म पानी चाहिए...नल के पानी से ही नहा लेते हैं और ऊपर से कहते हैं कि ऐसे नहाने से शरीर बीमारियों से बचा रहता है। गरम कपड़े भी कई-कई दिन तक पहन लेते हैं ...कहते हैं रोज़-रोज़ धोने से कपड़े खराब हो जाते हैं और फिर पानी भी ज्यादा लगता है... कितने गिनाऊँ मैं उनके काम..।

घर में कोई टूटी खुली देखते हैं तो तुरंत कसकर बंद कर देते हैं। गर्मी में बैठे रहते हैं पेड़ की ठंडी-ठंडी छाँव में... घर के छोटे-मोटे काम साइकिल पर ही निपटा आते हैं .. कितना करते हैं मेरे पापा...। बिजली, पानी, पैट्रोल....हर छोटी- छोटी बात का ध्यान रखते हैं और फिर भी कहते हैं कि मैं कुछ नहीं करता। आप ही बताइए - क्या ठीक कहते हैं मेरे पापा?'

89 विचार बदल गया

शिखा को बहुत गुस्सा आया हुआ था। न जाने क्यूँ उसने सोचा - "व्हाट्स एप, फेसबुक व फोन पर बहुत बातें हो ली... इस बार हाथों से पत्र लिखती हूँ ...सारी बात क्लीयर हो जाएगी। मुझे उसके साथ रहना ही नहीं है.. अपने आप को समझता क्या है... जब उसे मेरी चिंता नहीं तो मैं क्यूं करूँ? शर्म नहीं आती उसे... एक साल से माँ के घर बैठी हूँ ...लेने ही नहीं आया। सहज स्वभाव में ही तो राखी पर आई थी। मुझमें कमियां गिनवाता है.. वह भी और उसकी माँ भी। कहते हैं कि मैं डिप्रेशन की दवा खाती हूँ ..। अरे! यदि उसमें कोई कमी होती ...अथवा शादी के दूसरे दिन ही किसी भी एक्सीडेंट में कोई भी कारण बन जाता तो क्या मैं उसे छोड़ कर चली आती? नहीं.. बिल्कुल न आती... सारी उम्र निभाती...जी जान लगाकर सेवा करती.. । बस... बहुत हो गया। मैं पढ़ी लिखी हूँ.. कमाती हूँ...।"

बहुत कुछ सोचा उसने लिखने के लिए लेकिन बस इतना ही लिख पाई.. "तुम यह मत सोचो कि मैं तुम्हारे बिन नहीं रह सकती ...हां! यह मत सोचो....(बस इतना ही लिखा था कि विचार बदल गया। शिखा का अहम टप-टप करते आँसूओं में टूटने लगा).... नहीं रह सकती... शायद... नहीं रह सकती.... नहीं रह सकती... तभी तो लिख रही हूँ ... ..कब आओगे.. ?" -आंसुओं से भीगा वह पन्ना उसने पोस्ट कर दिया था।

तीन दिन के बाद ... शिखा की खुशी का वह सबसे बड़ा दिन था... छोटे से सच्चे विचार ने उसकी दुनिया ही बदल दी.. ।

90. रिटायर आदमी

जगदीशचन्द्र को रिटायर हुए साल भर हो गया। पिछले साल जनवरी के महीने में तो रिटायर हुआ था। पूरे सात साल प्रोफेसर एण्ड हैड रहा। छह-छह कोटपैंट जो उस समय कम लगते थे, अब पहनने का मौका ही नहीं मिलता। पत्नी है,जो पहले भाग-भागकर उसका सारा काम करती थी, अब कई बार कहने पर भी नहीं सुनती।

आज ही की बात है कि वह सुबह से कह रहा था कि मेरे कपड़े प्रेस कर दो। परन्तु वह उलटा जवाब देते हुए कहने लगी,

- "क्या प्रेस-प्रेस लगा रखी है, आपको कहीं जाना तो है नहीं।"

उसने कहा, "अरे ! मैं एक सप्ताह से यही पैंट पहन रहा हूँ।"

तो कहने लगी, "फिर क्या हुआ।"

- "परसों मेरा लंच है कहीं, कोट-पैंट पहनूँगा....।"
- "अच्छा...! आप कोट-पैंट पहनोगे। कितना खुश हो रहे हो जैसे कभी कोट-पैंट पहना ही नहीं हो....।"

दोनों हँसने लगे..।

91. जज की विनम्रता

प्रिया के घर में छोटी सी समारोह पार्टी थी। पति के दोस्तों में एक श्री गुरूकिरण जज भी थे। परिवार में सभी को ऐसा लग रहा था कि जज आएँगे ठीक से व्यवस्था होनी चाहिए क्योंकि वह अभी तक कभी घर नहीं आए थे। पता नहीं वह कैसे होंगे। कितना लेट आएँगे।

खैर! वह ठीक समय पर सपत्नीक पहुँच गए। बहुत ही सरल-सहज स्वभाव। जैसे ही मम्मी-सास ने रूहअफ़जा बनाकर उन्हें गिलास पकड़ाया तो उन्होंने गिलास की ओर देखा और ऊँगली से कुछ निकाल कर बाहर फैंक दिया।

मम्मी ने पूछा,

- "क्या हुआ कुछ पड़ गया था क्या?"
- "नहीं-नहीं आँटी! कुछ नहीं... मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।"
- "कुछ तो होगा... क्या था उसमें?"
- "नहीं आँटी! ज़रा सी कीड़ी थी... मैंने निकाल दी.. (जज ने रूहअफ़जा पी लिया और कहने लगे).. मेरा फेवरेट है-रूहअफ़जा। मुझे तो एक गिलास और भी चाहिये।"

92. इतना ही सुनता है

विनोद और महेश जब छोटे थे- दोनों रोज़ लड़ते कि मां मेरी ओर सोएगी-मां मेरी ओर सोएगी। आखिर मां झगड़ा निपटाते हुए कहती,

- "लो! मैं बीच में सो जाती हूँ। इतना सुनते ही दोनों चुप हो जाते।"

अब दोनों भाई बड़े हो गए... एक ही द्वार है कोठी का... । दाँई ओर छोटा भाई, बाँई ओर बढ़ा भाई रहता है। अब भी माँ आँगन के बीच चारपाई बिछा के सोती है...। उसे सुनाई कम देता है। बस! टुकर-टुकर कर दरवाजे को ताकती रहती है। कोई नहीं कहता, मां मेरी है - मां मेरी है। कभी जब बहुत ध्यान देती है तो इतना ही सुनता है, अब रोटी की बारी तेरी है - शाम को मेरी है...।

93. शहीद की पत्नी

आज व्हाट्एप्प पर तोष ने एक चित्र देखा जिसमें एक माँ अपने छह सात साल के बेटे को फौजी ड्रेस पहनाकर, बाहर आँगन में शहीद पति के हैंगर में टँगे हुए लंबे ओवर-कोट की दाँई बाजू में हाथ डाले उसके संग खड़ी है।

न जाने क्यूँ वह बार-बार थोड़ी देर बाद उस चित्र को देख लेती है और फिर रो पड़ती है। रात को भी लेटे हुए यही चित्र उसके दिमाग में घूमता रहा। इस चित्र को तोष ने कई और ग्रुप्स में भी भेजा। कई कवियों ने श्रद्धांजलि रूप में कविताएं भी लिखीं। जब शाम को ड्यूटी से घर आई बेटी को दिखाया तो देखते ही वह ठंडी-साँस भरते हुए बोली,

- "मम्मी! वह तो एक बार शहीद हुआ..यह तो जीते-जी रोज़ शहीद होगी..।"

94 घरेलू औरत

जैसे ही पाँच बजे अलार्म की घंटी बजी तो सुकन्या जल्दी से उठ कर बैठ गई। फिर याद आया - 'आज तो कोरोना के कारण कर्फ्यू है। किसी को भी काम पर नहीं जाना। तुम इतनी जल्दी उठ कर क्या करोगी.. थोड़ा सा और सो जाओ' वह स्वयं से कहने लगी। आखिर वह लेट गई परंतु चैन नहीं पड़ा फिर से उठ कर बैठ गई और सोचने लगी, 'यह तो आज कोरोना के कारण थोड़ा सा चैन है.. वर्ना तो लगता है कि घर में रहने वाली औरत मशीन बन गई है .. सुबह जल्दी उठना और देर रात्रि तक सुबह की तैयारी करके सारा काम निपटा कर सोना... कामकाजी महिलाएँ तो ड्यूटी से लौटकर घंटा भर चैन भी पाती होंगी परंतु घरेलू औरत तो यह भूल ही गई है कि आराम नाम की कोई चीज़ भी होती है...।'

95. उपहार

छोटे-छोटे उपहार याद दिलाते हैं हमें बीते दिनों की। उन्हीं से प्रेरणा मिलती है कि हम भी आने वाली पीढ़ी को कुछ देकर जाएं। कोई ऐसी वस्तु जिसे वह सहेज कर रख सकें। भले ही वह भाव हों, विचार हों, शब्द हों अथवा ज्ञान हो।

सीता भी शादी के कुछ दिन पश्चात जब मां के घर गई तो उसकी दादी ने उसे अपने संदूक से निकाल कर दादा जी की पुरानी चांदी की गोल-गोल अनमोल घड़ी दी, जिसे वह अपने गले में डाल कर रखा करते।

यूँ तो कहने मात्र को वह छोटी सी वस्तु थी परंतु अब वह जब भी कभी अपनी अलमारी में रखी उस घड़ी को देखती है तो दादा जी का चेहरा आंखों के सामने आ जाता है।

सोच रही थी.. दादी का दिया हुआ यह छोटा सा उपहार कितना आनंद देता है। दरअसल देने की परंपरा हमें जोड़ कर रखती है।

यही सोच कर सीता ने भी अपनी आठ महीने की नन्ही सी पोती पवित्रा के लिए, हाथ के सूई धागे से सिलाई कर के नाईट सूट पहनाया।